क़यामत कब आयेगी

अ़लामाते क़यामत के बारे में पचास (50) हदीसें

लेखकः

शैख़ुल हदीस हज़रत अब्दुल मुस्तफ़ा आज़मी
अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान

तकसीम कार
मौहम्मदी बुक डिपो

नाशिर
आज़मी बुक डिपो

786
92

बल्की उनका वाअ़दा क़यामत पर है और क़यामत
बहुत ही खौफ़नाक और निहायन ही कड़वी है
(क़ुरआन)

क़यामत कब आयेगी ?

अ़लामाते क़यामत के बारे में (50) पचास हदीसें

लेखक
शैखुल हदीस हज़रत अ़ब्बुल मुस्तफ़ा आज़मी
अ़लैहिर्रहमतु वर्रिज़वान

अनुवादक
मौलाना फ़ज़ले रसूल आज़मी

नाशिर
आज़मी बुक डिपो

तकसीम कार
मोहम्मदी बुक डिपो

नाम — क़यामत कब आयेगी ?

मुसन्निफ़ — शैख़ुल हदीस हज़रत अब्दुल मुस्तफ़ा आज़मी अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान

तरजमा — मौलाना फ़ज़्ले रसूल आज़मी

नाशिर — आज़मी बुक डिपो मुहल्ला करीमुद्दीन पुर पोस्ट घोसी ज़िला मऊ यू०पी०

इशअत — 2007March

तबाअत — 1100

मुल्य —

मिलने का पता

रज़ा बुक डिपो दिल्ली
फारूकिया बुक डिपो दिल्ली
मकतबा नईमिया जामा मस्जिद दिल्ली
अल क़ुरआन कम्पनी कमानी गैट अजमेर
नाज बुक डिपो मौहम्मद अली रोड मुम्बई

इन्तिसाब

अपनी प्यारी बेटी

आरिफ़ा ख़ातून मरहूमा मुतवफ़्फ़िय:
27 सफ़र 1316 हिजरी

के

इसाले सवाब के लिये

अल्लाहुम्मग़्फ़िर लहा व लिवालिदैना
व लना बिरह़्मती क या अरहमर्राहिमीन

आमीन

ग़र्ज़े तालीफ़

क़यामत इस्लाम का एक बुनियादी अ़क़ीदा है मगर इस अ़क़ीदा का इस ज़माने में चर्चा बहुत ही कम हो गया है इस लिये कुछ अ़वाम तो इस से ग़ाफ़िल, और बाज़ तो इस अ़क़ीदा की अहमियत ही से जाहिल हैं-इस लिये ख़्याल हुआ कि अ़क़ीदए क़यामत के बारे में भी चन्द सफ़हात लिख दूँ और क़यामत की चन्द निशानियों का तज़किरा भी तहरीर कर दूँ ताकि लोग इन निशानियों को देख कर क़यामत को याद रखें और जो लोग इससे जाहिल या शुकूक व शुबहात के दलदल में फँसे हुये हैं वह इन निशानियों के ज़रिअ़ा सिराते मुस्तक़ीम की उस शाहराह पर आजायें कि तक़रीबन 1400 चौदह सौ बरस पहले नबीये आख़िरूज़्ज़माँ सल्लल्लाहु अ़लैहि वस्ल्लम ने क़यामत की जिन निशानियों के बारे में ख़बर दी थी जब वह हमारी निगाहों के सामने कुछ आ चुकीं और कुछ आरही हैं तो यक़ीनन दुसरी निशनियों का ज़ुहूर, और क़यामत का आना भी ज़ुरूर बिज़्ज़ुरूर हक़ और यक़ीनन बिला शुब्हा बरहक़ है।

चुनान्चे इस सिलसिले में पचास 50 उनवानों के तहत अ़लामाते क़यामत की 50 हदीसों और उनके तराजिम व तशरिहात का मजमूअ़ा, *क़यामत कब आयेगी ?* के नाम से नाज़िरीन की ख़िदमत में पेश करता हूँ और दुअ़ा करता हूँ कि ख़ुदा वन्दे क़ुद्दूस इस गुलदस्तए अहादीस को सनदे क़ुबूल अ़ता फ़रमाये और इस किताब को गुलशने हिदायत का फूल बनाकर मुझ ज़लूम व जहूल

और मेरे वालेदैन व अइज़्ज़ः के लिये जन्नतुल फ़िरदौस का ज़रीअ़ए हुसूल बनाये:-

आमीन बजाहे सय्यदुल मुर्सलीन अ़लैहि
व अ़ला आलेही व अस्हाबेही अस्सलातु
वस्सलामु एला यौमिद्दीन॰

अ़ब्दुल मुस्तफ़ा आ़ज़मी ओ़फ़ियः अ़न्हो
5 रबीउल अव्वल 1398 हि/0 बराऊँ श़रीफ़

अल्लाहु अकबर

क़यामत की हैबत से सब काँपते हैं
कि कह्हारे आ़लम का दरबार होगा
मगर फिर भी है आर्ज़ूए क़यामत
कि महबूबे बारी का दीदार होगा

०बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम०

नह्मदुहू व नुसल्ली अ़ला रसूलेहिल करीम

क़यामत का बयान

अल्लाह तआ़ला ने अपनी मुक़द्दस किताब कुरआ़ने मजीद में फ़रमाया कि,, इन्नस्साअ़ त आतियतुन,, यानी बेशक क़यामत आने वाली है:-

क़यामत क्या है?

अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों को उनके अच्छे और बुरे कामों का बदला देने के लिये एक ख़ास दिन मुक़र्रर फ़रमा दिया है जिस दिन वह नेकोकारों और बदकारों के अच्छे और बुरे आमाल की जज़ा व सज़ा का फ़ैसला फ़रमायेगा और नेकों को जन्नत की नेमतें और बदों को जहन्नम का अ़ज़ाब देगा-उस दिन का नाम क़यामत है:-

क़यामत किस तरह आयेगी

क़यामत एक दम अचानक और बिल्कुल ही नागहाँ आयेगी लोगों को इसका कोई ख़्याल ही नहीं रहेगा और रोज़ाना के मुताबिक़ लोग अपने अपने कामों में मशग़ूल होंगे कि दफ़्अ़तन अल्लाह तआ़ला हज़रते इसराफ़ील अ़लैहिस्सलाम को सूर फूंकने का हुक्म देगा,, सूर,, बिगुल की तरह एक चीज़ है जिसको हज़रते इसराफ़ील

अ़लैहिस्सलाम अपने हाथ में लिये हुये आस्मान पर अल्लाह तआ़ला के हुक्म के इन्तेज़ार में खड़े हुये हैं, शुरू शुरू में सूर की आवाज़ बहुत ही बारीक और सुरीली होगी मगर रफ़्ता: रफ़्ता: यह आवाज़ बुलन्द और भयानक होती जायेगी यहां तक कि लोग कान लगाकर उस आवाज़ को सुनेंगे और बेहोश व बदहवास होकर गिरते और मरते चले जायेंगे-आस्मान टूट फूट कर और टूकड़े टूकड़े होकर गिर पड़ेगा-ज़मीन में इतना ज़बरदस्त भौंचाल आ जायेगा कि ज़मीन ज़ोर ज़ोर से हिलने और कांपने लगेगी-यहां तक कि रेज़ा रेज़ा होकर बिखर जायेगी बल्कि गर्द व ग़ुबार बनकर उड़ने लगेगी-छोटे बड़े पहाड़ चक्नाचूर होकर धुने हुये ऊन की तरह इध र उधर उड़ते फिरेंगे, चाँद सूरज और सितारे बेनूर होकर झड़जायेंगे और हर तरफ़ ऐसी आफ़त व हिलाकत और तबाही व बरबादी फैल जायेगी कि तमाम जान्दार और बेजान सब छोटी बड़ी चीज़ें यहाँ तक कि खुद हज़रते इसराफ़ील अ़लैहिस्सलाम और उनका सूर सभी फ़ना हो जायेंगे और अल्लाह के सिवा कोयी भी मौजूद व बाक़ी नहीं रहेगा उस वक़्त ख़ुदा वन्दे क़ुद्दूस अपनी जलाली शान के साथ यह एलान फ़रमायेगा *"लेमनिल मुल्कुल यौम"* आज किसकी बादशाही है? कहां हैं आज ज़ोर व ज़बरदस्ती करने वाले? किधर हैं आज घमन्ड व तकब्बुर करने वाले? मगर वहां कोयी मौजूद ही नहीं होगा जो जवाब दे फिर खुद ही अपनी अ़ज़मत व किब्रियाई के साथ इर्शाद फ़रमायेगा, *लिल्लाहिल वाहिदिल क़हहार,* आज सिर्फ़ अल्लाह ही की सल्तनत है जो एक है और निहायत ही ग़ल्बा वाला है:-

फिर जब अल्लाह तआ़ला चाहेगा हज़रते इस्राफ़ील

अ़लैहिस्सलाम को ज़िन्दा फ़रमायेगा-और सूर को पैदा करके दुबारा सूर फूंक ने का हुक्म देगा अब्की मरतबा हज़रते इसराफ़ील अ़लैहिस्सलाम जूंही सूर फूंकेंगे सब अगले पिछले इन्सान व जिन्न और फ़रिश्ते और तमाम जान्दार मख़्लूक़ जिन्दा होकर मौजूद हो जायेंगे और तमाम मुर्दे अपनी अपनी क़ब्रों और मरघटों से या जहां जहां भी उनकी लाशों के ज़र्रात पड़ें होंगे सब अपनी अपनी जगहों से ज़िन्दा होकर निकल पड़ेंगे सबसे पहले हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम अपनी क़ब्रे अनवर से इस शान के साथ बाहर तशरीफ़ लायेंगे कि आपके दाहिने मुक़द्दस हाथ में हज़रते अबू बकर रज़ियल्लाहु अ़न्हु का हाथ होगा और बाएं मुबारक हाथ में हज़रते उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु1-का हाथ होगा-फिर मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनौव्वरा के मुबारक क़ब्रिस्तानों में जो मुसल्मान दफ़्न हैं उन सब को अपने हमराह लेकर मैदाने महशर में तशरीफ़ ले जाएंगे तमाम दुनिया भरके अगले और पिछले इन्सान व जिन्न वग़ैरह सबके सब उसी मैदाने महशर में जमा होंगे जहां सब के अच्छे और बुरे आमाल का वज़न और हिसाब होगा।:-

मैदाने मह़शर

मैदाने मह़शर मुल्के शाम की ज़मीन पर क़ायम होगा उस दिन ज़मीन इतनी हमवार और साफ़ सुथरी होगी कि उस मैदान का एक किनारा दुसरे किनारे से साफ़ दिखायी देगा उस दिन ज़मीन

ताँबे की होगी और सूरज ज़मीन से सिर्फ़ एक मील की दूरी पर होगा उस दिन पचास हज़ार 50000 बरस का एक दिन होगा उस दिन की धूप और तपिश से ख़ुदा की पनाह ! सरों में भेजे खौलते होंगे-प्यास की शिद्दत का यह आलम होगा कि ज़ुबानैं सूख कर काँटा हो जाएँगी और किसी किसी की ज़बानें बाहर निकल पड़ी होंगी इस कसरत से पसीना निकलेगा कि किसी के टख़नों तक, किसी के घुटनों तक, किसी की कमर तक और कोई अपने पसीनों में डुब्कियां लगाता होगा इन तकलीफ़ों और मुसीबतों के साथ बेकसी व बेबसी का यह हाल होगा कि कोई किसी का पुरसाने हाल नहीं होगा भाई भाई से भागेगा, माँ बाप अपनी औलाद से पीछा छुड़ायेंगे, बच्चे माँ बाप से बिछड़ जायेंगे, शौहर बीवी से और बीवी शौहर से बेज़ार होकर सब एक दुसरे से जान चुराते फिरेंगे यह ऐसा कठिन और दहशतनाक दिन होगा कि तकालीफ़ और आलाम व मसाइब के बोझ से छोटे छोटे बच्चे दुख दर्द और रंज व ग़म उठाते उठाते बूढ़े हो जायेंगे-हमल वालियों के हमल गिर पड़ेंगे-ख़ौफ़ व दहशत और परीशानियों से लोग प्रागन्दह टिड्डियों की तरह इधर उधर गिरते पड़ते होंगे और लोग मदहोशी और बदहवासी के आलम में इस तरह लड़खड़ाते हुए चलेंगे कि गोया नशा की हालत में हैं हालाँकि लोग नशा में नहीं होंगे लेकिन अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब की सख़्तियाँ उन्हें मदहोश और बदहवास बनाकर इस हाल में पहुंचा देंगी:-

(मज़ामीने कुरआ़न मजीद व अहादीसे शरीफ़:)

नामए आ़माल

क़यामत के दिन हर एक आदमी की ज़िन्दगी भर का नामए आमाल उसके हाथ में दिया जायेगा नेकों के दाहिने हाथ में और बदों के बाएं हाथ में काफ़िर का सीना तोड़कर उसका बायाँ हाथ उसकी पीठ के पीछे निकाल कर उसके बाएं हाथ में उसका नामए आ़माल दिया जायेगा।

(कुरआ़न व हदीस)

मीज़ाने अ़मल

क़यामत के दिन हर आदमी के आमाल मीज़ानमें तौले जायेंगे जिसकी नेकियों का पल्ला भारी होगा वह जन्नत की नेअ़मतों में आराम व चैन की ज़िन्दगी बसर करेगा और जिसके गुनाहों का पल्ला भारी होगा और नेकियों का पल्ला हल्का पड़ जायेगा उसका ठिकाना जहन्नम,, में होगा और वह तरह तरह के अ़ज़ाबों में गिरिफ़्तार किया जायेगा। *(कुरआ़न व हदीस)*

हिसाब व किताब

क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों को अपनी नेमतैं याद दिलाकर उनकी उ़म्र भर की नेकियों और गुनाहों का हिसाब लेगा अल्लाह तआ़ला बाज़ मोमिनीन से इस तरह हिसाब लेगा

कि उनसे पूछेगा कि तुमने यह गुनाह किया यह गुनाह किया मोमिनीन अपने गुनाहों का इक़रार करते जायेंगे फिर अल्लाह तआला अपने मोमिन बन्दों पर रह्म फ़रमायेगा और इर्शाद फ़रमायेगा कि जा मेरे बन्दे! मैंने दुनिया में तेरे गुनाहों को छुपाया था और आज मैंने अपने रह्म व करम से तुझ को बख़्श दिया और बाज़ लोगों से सख़्ती के साथ पूछ गछ होगी-ऐसे लोग ख़ुदावन्दे कह्हार व जब्बार की पकड़ में आकर हिलाकत में पड़ जायेंगे-काफ़िरों से अल्लाह तआला इन्तिहाई क़ह्र व ग़ज़ब की शानके साथ बेहद सख़्ती से बाज़ पुर्स (पूछताछ) फ़रमायेगा और हिसाब लेगा-कुफ़्फ़ार इन्तिहाई ज़िल्लत व रूसवाई में गिरिफ़्तार होंगे उनके मुहं पर मुहर लगादी जायेगी और उनके हाथ पांव वग़ैरह वदन के तमाम आज़ा उनके आमाल और ज़िन्दगी भर के कामों के बारे में गवाही देंगे-और कुफ़्फ़ार को इन्कार की मजाल न होगी-बल्कि वह अपने जुर्मों और गुनाहों का इक़रार करेंगे-मीज़ान में आमाल की तौल और हिसाब व किताब के बाद अल्लाह तआला अपने बन्दों के बारे में अ़ज़ाब व सज़ा का फ़ैसला फ़रमायेगा और नेकों को जन्नत में भेज देगा जहां वह तरह तरह की नेमतों में आराम और चैन के साथ रहेंगे और गुनाहगार मुसलमानों और काफ़िरों को दोज़ख़ में डाल देगा जहां वह क़िस्म क़िस्म के अ़ज़ाबे जहन्नम की तकालीफ़ उठायेंगे! फिर गुनाहगार मुसलमान अपने गुनाहों के बराबर जहन्नम की आग में जलकर दोज़ख़ से निकालकर जन्नत में भेज दिये जायेंगे और कुफ़्फ़ार हमेशा हमेशा के लिये जहन्नम ही में रह जायेंगे:-

शफ़ाअ़त

क़यामत के दिन मैदाने महशर की तकलीफों से तमाम लोग परेशान होकर किसी को सिफ़ार्शी तलाश करेंगे ताकि वह अल्लाह तआला के दरबार में इन लोगों की सिफ़ारिश करे, मुसीबतों से छुटकारा दिलाए चुनांचे अहले महशर अपने सिफ़ार्शी की तलाश में हज़रते *"आदम"* अ़लैहिस्सलाम से लेकर हज़रते *"ईसा"* अ़लैहिस्सलाम तक तमाम बड़े बड़े रसूलों की बारगाह में हाज़िरी देंगे मगर कोई भी शफ़ाअ़त के लिये तय्यार नहीं होगा यहां तक कि हज़रते *"ईसा"* अ़लैहिस्सलाम लोगों को हुज़ूर ख़ातिमुन्नबीय्यीन सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के दरबारे अक़दस में दरख़्वासते शफ़ाअ़त पेश करने का मशविरा देंगे चुनांचे जब लोग बारगाहे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम में शफ़ाअ़त की दरख़्वास्त पेश करेंगे तो हुज़ूर रहमतुल्लिल आ़लमीन सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अहले महशर की ढारस बाँधाते हुए निहायत ही मुहब्बत के साथ इर्शाद फ़रमाएंगे कि *"अना लहा" अना लहा"* मैं इस काम के लिये तैयार हूं,, फिर आप अल्लाह तआ़ला की इजाज़त से शफ़ाअ़त का सिलसिला शुरू फ़रमाएंगे-यहां तक कि जिस के दिल में राई के दाने से भी कम ईमान होगा उसके लिये भी शफ़ाअ़त फ़रमाकर उसे जहन्नम से निकालेंगे उसके बाद तमाम अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम अपनी उम्मतों की शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे और औलिया, शुहदा, उलमा हुफ़्फ़ाज़, हुज्जाज भी सब अपने अपने मुतअ़ल्लिक़ीन की शफ़ाअ़त करेंगे यहां तक कि नाबालिग़ बच्चे बल्कि हमल से गिरे हुये बच्चे भी अपने मां बाप की शफ़ाअ़त करेंगे।

(क़ुरआन मजीद व अहादीसे शरीफ़ह)

जन्नत: यह एक मकान है जिसको अल्लाह तआ़ला ने ईमान वाले नेक बन्दों के लिये बनाया है और उसमें ऐसी ऐसी नेमतें तय्यार फ़रमायी हैं कि जिनको न किसी आंख ने देखा, न किसी कान ने सुना, न किसी के दिल में उसका ख़्याल आया।

दोज़ख् : यह एक मकान है जिसको अल्लाह तआ़ला ने काफ़िरों और गुनाहगारों के लिये बनाया है, जिसमें क़िस्म क़िस्म के बेशुमार ऐसे ऐसे अ़ज़ाबों का सामान है जिसको कोई सोच भी नहीं सकता-

क़्यामत पर ईमान

जिस तरह हर मुसलमान के लिये ख़ुदावन्दे आ़लम की तौहीद, उसके रसूलों की रिसालत, आसमानी किताबों, फ़रिश्तों और तक़दीर वग़ैरह ज़ुरूरियाते दीन पर ईमान लाना ज़रूरी है इसी तरह क़यामत के दिन पर भी ईमान लाना ज़रूरियाते दीन में से है यानी उस वक़्त तक कोई मुसलमान नहीं हो सकता जब तक यह यक़ीन न रखे की क़यामत ज़रूर आयेगी-जो शख़्स क़यामत का इन्कार करे या ज़र्रा बराबर इसमें शक करे वह काफ़िर और इस्लाम से ख़ारिज है:-

क़्यामत कब आयेगी?

क़यामत कितने बरसों के बाद और कौन से सन्: में आएगी

इसका इल्म अल्लाह तआ़ला ने अपने आ़म बन्दों से छुपा लिया है लेकिन अपने हबीब नबीये करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहिवसल्लम को अल्लाह तआ़ला ने दूसरे उ़लूमे ग़ैबियह की तरह क़यामत का भी पुरा पुरा इल्म अ़ता फ़रमा दिया है मगर आपको यह हुक्म दे दिया था कि क़यामत कब? और कितने बरसों के बाद? और किस सन्: में आएगी? इस इल्म को आप अपनी तमाम उम्मत से छुपाये रक्खें।

(तफ़सीर सावी सफ़्हा 289 जिल्द 3)

चुनांचे हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने अपने किसी उम्मती को यह नहीं बताया कि क़यामत कब? और कितने बरसों के बाद? और किस सन्: में आएगी?

हां क़यामत के सन्: के सिवा क़यामत की तारीख़ क़यामत का महीना क़यामत का दिन यह सबकुछ हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपनी उम्मत को बता दिया है-

चुनांचे आज मुसलमान का,, बच्चा बच्चा "यह जानता है कि क़यामत मुहर्रम के महीने में दसवीं 10 वीं तारीख़ को जुमा के दिन आएगी:-

क़्यामत का सन: क्यूं छुपाया गया?

अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को क़यामत का सन: छुपा लेने का जो हुक्म दिया इसमें अल्लाह व रसूल की बड़ी बड़ी हिकमतें और मस्लिहतें हैं जिनको कमा हक़्क़ुहू (पूरी तरह) हम नहीं समझ सकते लेकिन एक ख़ास हिकमत व

मस्लिहत यह भी हो सकती है कि अगर हुज़ूर सल्लललाहु अ़लैहि वसल्लम अपनी उम्मत को यह बता देते कि क़यामत फ़लां सन्: में आयेगी तो ख़ुदा का कलाम क़ुरआ़ने मजीद झुठा हो जाता क्यों कि क़यामत के बारे में अल्लाह तआ़ला का यह फ़रमान है - तरजुमा, *(क़यामत बिल्कुल ही अचानक आएगी)* अब ज़ाहिर है कि अगर हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम अपनी उम्मत को यह बता देते कि इतने बरस के बाद फ़लां सन्: में क़यामत आएगी तो फिर क़यामत का आना अचानक नहीं होता क्योंकि लोग हमेशा गिन्ते और हिसाब करते रहते कि अब क़यामत के आने में इतने बरस, इतने महीने, इतने दिन बाक़ी रह गए हैं फिर इस सूरत में भला क़यामत का आना अचानक किस तरह होता : -

इल्मे नुबूवत की तीन किस्में

जान लेना चाहिए कि अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को तीन क़िस्मों के उ़लूम अ़ता फ़रमाए हैं।

(1) वह उ़लूम जिन्हें अपनी उम्मत के तमाम ख़वास व अ़वाम को बता देना आप पर फ़र्ज़ था जैसे अहकामे शरीअ़त।

(2) वह उ़लूम जिनके बारे में आपको यह इख़्तियार दिया गया था कि आप जिसको चाहें बतायें और जिससे चाहें छुपाएं जैसे बहुत से रुमूज़ व असरार और ग़ैब की ख़ास ख़बरें कि आपने अपने ख़ास ख़ास सहाबा को बताया और आ़म लोगों से छुपाया।

(3) वह उ़लूम जिनका तमाम उम्मत से छुपाना आप पर फ़र्ज़ था जैसे क़यामत का सन्: और हुरूफ़े मुक़त्तआ़त और आयाते मुतशाबिहात वग़ैरह।

(तफ़सीरे रूहुल बयान जिल्द 3 सफ़हा 180)

क़यामत की निशानियाँ

क़यामत के आने से पहले बहुत सी क़यामत की निशानियाँ ज़ाहिर होंगी जिनका इल्म अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल सल्लल्लाहु,अ़लैहि वसल्लम को अ़ता फ़रमाया है और आप ने अपनी उम्मत को वह निशानियाँ बतादी हैं जो बिला शुबहा ग़ैब की ख़बरें हैं।

उन निशानियों की तादाद बहुत ज़्यादह है और उनकी दो क़िस्में हैं।

* एक *"अ़लामाते सुग़रा"* (छोटी निशानियाँ) यह वह निशानियां हैं जो क़यामत के आने से बहुत पहले ही ज़ाहिर होने लगेंगी:-

* दुसरी *"अ़लामाते कुबरा"* (बड़ी निशानियां) जिनका ज़हूर बिल्कुल ही क़ुर्बे क़यामत में होगा हम क़यामत की उन छोटी बड़ी निशानियों में से चन्द निशानियों का (तज़किरा तहरीर करते हैं और मुनासिब समझते हैं कि जिन जिन हदीसों में इन निशानियों का ज़िक्र है) उन हदीसों को भी उनही अलफ़ाज़ के साथ नक़ल

कर दें जो हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की ज़बाने मुबारक से अदा हुए हैं ताकि किताब पढ़ने वालों को इन अहादीसे शरीफ़ा की तिलावत का भी शर्फ़ व सवाब मिल जाए और मुझ गुनाहगार को उम्मते रसूल अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम तक इन हदीसों को पहुंचा देने की सआ़दत और अजरे अ़ज़ीम हासिल हो जाए जो मेरे लिये सामाने आख़िरत और ज़रिए मग़फ़िरत बनें।

हदीस शरीफ़ की अ़रबी इबारत उर्दू किताब में तहरीर है इस किताब में सिर्फ़ हदीस शरीफ़ का तरजुमा लिख दिया गया है और हवाला नम्बर दे दिया गया है ।

नाशिर

नँगे चरवाहे महलों में

हदीस (1)

तरजुमा:- हज़रते उमर इब्नुल ख़त्ताब रज़िअल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है (हज़रते जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने कहा) कि (या रसूलल्लाह) आप मुझे क़यामत की निशानियों के बारे में ख़बर दीजिये तो आपने फ़रमाया! यह है कि लौंडी अपने मालिक को जनेगी और नन्गे पांव वाले, नन्गे बदन वाले, मुहताजों, बकरियों के चरवाहों को तुम महलों में फ़ख़्र करते हुए देखोगे!

(मिश्कात किताबुल ईमान जिल्द 1 सफ़हा 11)

तशरीह:– यह एक लम्बी हदीस का टुकड़ा है जिसके रावी अमीरूल मुमिनीन हज़रते उमर बिन खत्ताब रज़िअल्लाहु अ़न्हु हैं यह हदीस बुख़ारी व मुस्लिम व तिर्मीज़ी में भी है।

इस हदीस में क़यामत की दो निशानियों का बयान है

पहली (1) : यह कि "लौंडी के पेट से उसके आक़ा पैदा होंगे" यानी नाफ़रमान औलाद पैदा होगी जो अपनी माओं के साथ इतना ख़राब सुलूक करेंगे जैसा कि मालिक और आक़ा अपनी बांदियों और लौंडियों के साथ बुरा सुलूक करते हैं।

इस हदीस की दूसरी तशरीहात भी हैं लेकिन हमने जो मतलब तहरीर किया है वह बिल्कुल आ़म फ़ह्म और बहुत ज़्यादा वाज़िह् है।

दूसरी (2) : यह कि बकरियों के चरवाहे जो नगे पांव, नगे बदन,, मुहताजी और मुफ़्लिसी की हालत में दरबदर फिरते रहते थे वह क़ुर्बे क़यामत के वक़्त ऊंचे ऊंचे महलों और शानदार बिल्डिगों में फ़ख़्र व ग़ुरूर के साथ ऐश व इशरत की ज़िन्दगी बसर करेंगे।

तब्सिरा:– क़यामत की मज़कूरा बाला दोनों निशानियां अ़लल एलान तमाम दुनिया में ज़ाहिर हो चुकी हैं कौन नहीं जानता कि नाफ़रमान औलाद की कसरत का यह आ़लम है कि आज सैकड़ों बल्कि हज़ारों मां बाप अपनी औलाद की नाफ़रमानियों और उनकी बदसुलूकियों से बेज़ार और नालाँ हैं बल्कि बहुत से मां बाप औलाद की बदसुलूकियों से जल भुनकर औलाद के लिये बददुआ़ करते रहते हैं।

इसी तरह वह ज़लील व पस्त अक़्वाम जिनकी ग़रीबी और मुफ़लिसी का यह हाल था कि उन्हें एक लंगोटी के सिवा कभी ज़िन्दगी भर न जूती मयस्सर हुई न टोपी जो फ़क्र व फ़ाक़ा और अफ़लास व गुरबत से लाचार होकर बकरियां चरा चरा कर अपना पेट पालते थे आज उन्हीं क़ौमों के अफ़राद में सैकड़ों बल्कि हज़ारों गंवार क़िस्म के लोग आ़ला ओ़हदों पर ब्राजमान होकर शानदार बंगलों में फ़िरऔ़न बने हुये घमन्ड व ग़ुरूर के साथ ऐश व इशरत की ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं।

अल्लाहु अक्बर ! हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने आज से तेरह सौ अट्ठानवे 1398 बरस पहले अपनी उम्मत को क़यामत की जिन दो निशानियों की ख़बरदी थी वह सौ फ़ीसदी 100% दुरूस्त और सही साबित हुईं हालांकि दो चार सौ बरस पहले कोई सोच भी नहीं सकता था कि दुनिया की निगाहें कभी ऐसे मनाज़िर भी देखेंगी कि जंगलों और मैदानी चरागाहों में बकरियां चराने वाले जिन्हे फूंस की छप्पर और बदन ढांपने के लिये कपड़ा भी नसीब नहीं होता था वह तो ज़र्क़ बर्क़ लिबास व पोशाक पहनकर ऊंचे ऊंचे महलों मे आराम व राहत के साथ मग़रूराना ज़िन्दगी गुज़ारेंगे और सलातीन व उमरा की औलाद जो शाही महलों में मख़्मली फ़र्श को अपनी जूतियों से रौंदते थे वह आज दरबदर की ठोकरें खाते और जूतियां चटख़ाते फिरेंगे वाह रे इन्क़लाब।

परदादारी मी कुनद बर ताक़े किसरा अ़नकबूत
चुग्द नौबत मी ज़नद बर गुम्बदे, अफ़रासियाब

सुबहानल्लाह ! क्यों न हो कि यह उस ग़ैबदाँ नबीये बरहक़ की दी हुई ख़बरें हैं जिनके सीनए नुबूवत को ख़ुदावन्दे अ़ल्लामुल

ग़ुयूब ने उलूमें ग़ैबिया का ख़ज़ाना बना दिया है और जिनके फ़रमान का एक एक हर्फ़ ऐसा बरहक़ है कि जो न कभी टल सकता है न बदल सकता।

यह आसमान व ज़मीं टल सकें ये मुम्किन है
रसूले पाक का फ़रमान टल नहीं सकता

मर्द कम, औ़रतें ज़्यादह

हदीस (2)

तरजमा:– हज़रते अनस रजिअल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है उन्होंने कहा कि मैंने रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को यह फ़रमाते सुना कि यक़ीनन क़यामत की निशानियों में से यह है कि इल्म उठा लिया जाएगा और जिहालत की कसरत हो जाएगी और ज़िनाकारी बढ़ जाएगी और बकसरत शराब पी जाएगी और मर्दों की तादाद कम हो जाएगी और औ़रतों की तादाद बढ़ ज़ाएगी यहां तक कि पचास 50 औ़रतों का इन्तिज़ाम करने वाला अकेला एक मर्द होगा।

(मिशकात जिल्द 2, पेज नं० 469)

तशरीह:– यह हदीस बुख़ारी और मुस्लिम में भी है इस

हदीस में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने क़यामत की छ: निशानियों का ज़िक्र फ़रमाया है।

(1) इल्म उठा लिया जाएगा (2) जिहालत की कसरत हो जाएगी (3) ज़िनाकारी बहुत ज़्यादह होने लगेगी (4) शराब नोशी (पीना) कसरत से होगी (5) मर्दों की तादाद घटकर बहुत कम रह जाएगी (6) औ़रतों की तादाद बहुत ज़्यादा बढ़ जाएगी यहां तक कि 50 औ़रतों की निगहदाश्त और उनका इन्तिज़ाम करने वाला अकेला एक मर्द होगा।

"इल्म उठा लिया जाएगा" इस हदीस में इल्म से मुराद 'इल्मेदीन' है कि वह क़ुर्बे क़यामत में उठालिया जाएगा यहां तक कि रूए ज़मीन पर कोइ इल्मेदीन का जानने वाला बाक़ी न रहेगा।

हज़रते अ़ल्लामा मुल्ला अ़ली क़ारी शारहे मिश्कात अ़लैहिर्रहमा ने फ़रमाया कि दुनिया से इल्मेदीन का उठ् जाना दो तरह से होगा एक सूरत तो यह होगी कि उलमाएदीन एक के बाद दुसरे दुनिया से उठते चले जाएंगे और उनकी जगह पुर करने वाले उल्माएदीन पैदा न होंगे बल्कि रोज़ बरोज़ कम से कम इल्म वाले ओ़ल्मा होते जाएंगे इसी तरह रफ़्त:.रफ़्त: वह दौर आजाएगा कि रूए ज़मीन आ़लिमों से ख़ाली हो जाएगी और इल्मे दीन का जानने वाला कोई बाक़ी न रह जाएगा।

दूसरी : सूरत यह होगी कि उलमाए दीन ज़ालिम बादशाहों के दबाव, या उनकी चापलोसी में गिरफ़्तार होकर मुस्लिम अ़वाम में दीन का चरचा करना छोड़ देंगे इस तरह मुस्लिम अ़वाम इल्मेदीन से बिल्कुल ही जाहिल रह जाएंगे और जब रफ़्त: रफ़्त: उन सब आ़लिमों की वफ़ात हो जाएगी तो दुनिया से इल्मेदीन का भी जनाज़ा

निकल जाएगा और हर तरफ़ जिहालत का दौर दौरा हो जाएगा यहां तक कि कोई शख़्स अरकाने इस्लाम का जानने वाला, बल्की क़ुरआन का पढ़ने वाला भी न रह जाएगा बल्की एक हदीस में तो यहां तक आया है कि *"ला तक़ूमुस्साअ़तो हत्ता ला योक़ालल्लाहु अल्लाहु"* यानी जिस वक़्त क़यामत क़ायम होगी उस वक़्त की जिहालत का यह आ़लम होगा कि तमाम रूए ज़मीन में कोई अल्लाहू अल्लाहू कहने वाला भी बाक़ी न रहेगा।

(मिरक़ातुल मफ़ातीह जिल्द 5 सफ़हा 171)

तब्सिरा:- *इल्म का उठजाना और जिहालत की कसरत* क़यामत की इन दोनों निशानियों का ज़ुहूर शुरू हो चुका है क्योंकि रोज़ बरोज़ मुस्लिम अ़वाम में इल्मेदीन का ज़ौक़ व शौक़ घटता बल्की फ़ना होता चला जा रहा है और जो आ़लिम दुनिया से जाता हे वह अपना जानशीन छोड़कर नहीं जाता है उलमाए सल्फ़ के दौर में आज से एक हज़ार 1000 बरस पहले मुस्लिम अ़वाम में इल्मेदीन हासिल करने का कितना बड़ा जज़्बा और उनके दिलों को इल्मेदीन से किस क़दर वालिहाना तअ़ल्लुक़ और लगाव था इसका अन्दाज़ा करने के लिये बग़दाद शरीफ़ वग़ैरह के इस्लामी मदारिस की तारीख़ पर एक नज़र डालिये-

अबू हफ़्स ज़य्यात का बयान है कि जब मशहूर इमामे हदीस *अबू बक्र जाफ़र बिन मुहम्मद तुर्की फ़िरयाबी* तुर्किस्तान से बग़दाद तशरीफ़ लाए तो शहर के अ़वाम व ख़वास ने जोशे मसर्रत में तबल व तम्बूरह बजा बजा कर उनका निहायत ही पुरशिकोह इस्तेक़बाल किया और शान्दार जुलूस निकाला और जब वह,, शारिउलमनार,, के मैदान में दर्से हदीस देने के लिये बैठे तो उनकी दर्सगाह में रोज़ाना

तीस हज़ार 30,000 आदमियों का मज्मा होता था और चूंकि उस ज़माने में लाउडस्पीकर इजाद नहीं हुआ था इस लिये शैख़ुल हदीस की आवाज़ तमाम सामेईन तक पहुंचाने के लिये यह इन्तिज़ाम होता था कि तीन सौ 300 उलमा मज्मा मे खड़े रहते थे जो शैख़ुल हदीस की आवाज़ सुन सुनकर सामेइन को सुनाया करते थे।

(तज़किरतुल हुफ़्फ़ाज़ जिल्द 2 सफ़हा 337)

इस तरह मशहूर मुहद्दिस *अबू मुस्लिम कज्जी* की दर्सगाहे हदीस में जो बग़दाद के "रोहबए ग़स्सान" के वसी मैदान में थी हाज़िरीन की कसरत (ज़्यादती) का यह हाल था कि एक मरतबा खलीफ़ए बग़दाद ने आदमियों की तादाद का अन्दाज़ा लगाने के लिये उस मैदान की पैमाइश करायी, और तालिबे इल्मों (छात्रों) की दवातें गिनी गयीं तो चालिस हज़ार 40,000 से ज़्यादा दवातें पाई गयीं और जो हाज़ेरीन लिखते नहीं थे बल्कि सिर्फ़ हदीसें सुन रहे थे वह इस गिन्ती से अलग हैं।

(तज़किरतुल हुफ़्फ़ाज़ जिल्द 2 सफ़हा 177)

इस क़िस्म के पचासों वाक़िआत हामरी किताब "रूहानी हिकायात" और,, औलिया ऐ रिजालुल हदीस,, उर्दू व हिन्दी में पढ़िये *(लेखक)*

अब आप इल्मेदीन के इस कमाल व ज़वाल की तारीख़ पर नज़र डालते हुए इबरत हासिल कीजिये कि आज इन्द्रा गांधी, वग़ैरह के जलसों में तो एक एक लाख के इज्तिमा की ख़बरें छपती हैं मगर वाज़ (तक़रीर) के जलसों और इल्मेदीन की दर्सगाहों में चन्द ग़ुरबा चन्द मुफ़लिस तल्बा (ग़रीब छात्रों) के और कोई नज़र नहीं

आता।

अब अगर चन्द बर्सों तक मुसलमानों कि ग़फ़लत का यही हाल रहा तो ज़ाहिर है कि इल्मेदीन जान्ने वाले रोज़ाना कम होते चले जाएगे यहां तक कि एक दिन इल्मेदीन का जनाज़ा निकल जायेगा और हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम का यह इर्शाद कि "इल्म उठा लिया जायेगा और, जिहालत की कसरत हो जायेगी" आफ़ताब (सुर्य) की तरह सबकी निगाहों के सामने आ जायेगा।

ज़ेना की ज़्यादती : इसका सबब हया की कमी (बेशर्मी) और बेहयायी का ग़ल्बा है जब मर्दों और औ़रतों में हया की कमी होगी तो लाज़मी तौर पर ज़ेनाकारी बढ़ जायेगी और दुसरे गुनाहों के दरवाज़े भी खुल जायेंगे क्योंकि मोमिन की हया दर हक़ीक़त नफ़्स के शरीर घोड़े के लिये बेहतरीन लगाम और शैतान के हमलों से बचने के लिये एक मज़बूत ढाल, और मोमिन को हज़ारों गुनाहों से बचाने के लिये एक आहनी दीवार है।

चुनांचे जब से मुसलमानों में हया की कमी हो गयी औ़रतों का परदा ख़त्म होने लगा पार्कों और तफ़रीहगाहों में औ़रतों मर्दों का इख़्तेलात शुरू हो गया सिनेमा घरों और कलबों में लड़कों लड़कियों का मेल मिलाप होने लगा जिसका नतीजा यह है कि आजकल हर तरफ़ ज़ेनाकारी की गर्म बाज़ारी है हदीस शरीफ़ मे है कि जो क़ौम ज़ेनाकार होगी वह अ़ज़ाबे जहन्नम से पहले दुनिया ही में क़हत और भुक्मरी का शिकार होगी:।

(मिश्कात जिल्द 2 सफ़हा 313)

शराबनोशी की कसरत : आजकल मुसलमानों में यह मर्ज़ भी आम वबाओं की तरह फैल गया है हालांकि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने शराब के बारे में यह फ़रमाया है कि *"उम्मुल ख़बाइस"* (गुनाहों की मां) है कि इससे सैकड़ों गुनाहों का जन्म होता है।

चुनांचे आज ग़ैर मुस्लिम क़ौमों के लीडरों और दानिशवरों ने भी इस्लाम के इस हकीमाना फ़ैसले को एतिराफ़े हक़ीक़त के तौर पर तस्लीम कर लिया है कि "शराब नोशी मुल्कों व शहरों और ख़ुदा के बन्दों में फ़साद बर्पा करने वाली चीज़ है" यही वजह है कि आज दुनिया भर में शराब बन्दी का चर्चा हो रहा है।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि तीन 3 शख़्सों पर अल्लाह तआला ने जन्नत हराम फ़रमा दी है (1) शराबी (2) मां बाप का नाफ़रमान (3) दय्यूस (अपनी बीवी की ज़ेनाकारी से राज़ी होने वाला)

(मिशकात जिल्द 2 सफ़हा 318)

मर्द कम, औरतें ज़्यादा : क़यामत की यह निशानी भी ज़ाहिर हो रही है कि दुनिया भर में रफ़्तः रफ़्तः मर्दों की तादाद घट रही है और औरतों की तादाद बढ़ती जा रही है चुनांचे आज हज़ारों लड़कियां ऐसी है जिनके लिये शौहर नहीं मिल रहे हैं इसी तरह रफ़्तः रफ़्तः यह हाल हो जायेगा कि एक एक मर्द अपने अज़ीज़ व अक़ारिब यानी दादी, नानी, ख़ाला, भतिजियां, भान्जियां, वग़ैरह पचास पचास औरतों की परवरिश. निगहदाश्त और उनके सामाने ज़िन्दगी का इन्तिज़ाम करेगा-

इमाम नहीं मिलेगा

हदीस (3)

सोलामा बिन्ते हर्रान रज़िअल्लाहु अन्हा कहती हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़यामत की निशानियों में से यह है कि मस्जिद वाले एक दुसरे को (इमामत के लिये) धक्का देंगे लोग किसी को इमाम नहीं पायेंगे जो उन्हें नमाज़ पढ़ाये।

(अबू दाऊद जिल्द 1 सफ़हा 93)

तशरीह:- क़यामत क़रीब हो जाने के वक़्त जो इल्मेदीन दुनिया से उठा लिया जायेगा तो उसका यह अन्जाम होगा कि जिहालत की वजह से पुरी मस्जिद के नमाज़ियों में कोई इस क़ाबिल नहीं होगा जो इमाम बनकर नमाज़ पढ़ाये और लोग एक दुसरे को इमामत के लिये आगे बढ़ायेंगे मगर वह अपनी लाइल्मी और ना अहली की वजह से आगे नहीं बढ़ेगा।

तबसिरा:- क़यामत की इस निशानी के ज़हुर के आसार नज़र आने लगे हैं चुनांचे कचहरियों, स्टेशनों, बाज़ारों वग़ैरह की मस्जिदों में यह मनाज़िर देखे जा सकते हैं कि अगर इमाम साहब कभी ग़ाइब हो जाते हैं तो नमाज़ियों में इस क़िस्म का शोरोग़ुल शुरू हो जाता है कि मीर साहब! नमाज़ पढ़ाइये तो वह कहते हैं

कि शैख़ जी! आप इमाम बन जाइये एक दुसरे को धक्का देकर आगे बढ़ाते हैं और वह जल्दी से पीछे आकर दूसरे को आगे बढ़ाता है गोया नमाज़ में फ्रि स्टाइल कुस्ती की मश्क़ होने लगती है-काश मुसलमान इससे इबरत हासिल करते और अपने बच्चों को इतनी दीनी तालीम तो ज़रूर ही दिलाते कि वह नमाज़ पढ़ने और पढ़ाने के क़ाबिल हो जाते!

फ़ितनों के तूफ़ान

हदीस (4)

हज़रते अबू मूसा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु नबी सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यक़ीनन क़यामत से पहले अंधेरी रातों के टुकड़ों के मिस्ल बहुत से फ़ितने होंगे इसमें आदमी सुब्ह को मोमिन रहेगा और शाम को काफ़िर हो जाएगा और शाम को मोमिन रहेगा और सुब्ह को काफ़िर हो जायेगा उन फ़ितनों के दरमियान बैठा हुआ आदमी खड़े हुये आदमी से बेहतर होगा और चलने वाला दौड़ने वाले से बेहतर होगा लिहाज़ा तुम उन फ़ितनों के वक़्त अपनी कमानों को तोड़ डालना और

अपनी कमानों की ताँतों को काट डालना और अपनी तलवारों को पत्थरों से कुचल देना और अगर कोई तुमको क़त्ल करने के लिये तुम्हारे घर में दाख़िल हो जाये तो तुम आदम अ़लैहिस्सलाम के दोनों बेटों में से जो बेहतर था उसके मिस्ल हो जाना।

(मिशकात जिल्द 2 सफ़हा 424)

तशरीह:– यह हदीस अबू दाऊद में भी है इस हदीस में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने अपनी उम्मत को ग़ैब की यह ख़बर दी है कि क़यामत से पहले एक दो नहीं बल्कि बहुत से ऐसे फ़ितने उठेंगे कि जिस तरह अंधेरी रातों में रास्ता नहीं मिलता इसी तरह इन फ़ितनों से बचने का मोमिन को कोई रास्ता नहीं मिलेगा और जिस तरह अंधेरी रातें ख़ौफ़नाक और डरावनी हुआ करती हैं इसी तरह वह फ़ितने निहायत ही दह्शत अंगेज़ और भयानक होंगे इन फ़ितनों में गुमराहियों के फ़ैलने का यह आ़लम होगा कि आदमी सुब्ह को मोमिन रहेगा मगर किसी ज़ालिम के दबाओ से, या अपनी किसी नफ़सानी ख़ाहिश से, या किसी गुमराह बद्दीन के बहकाने से शाम को काफ़िर हो जायेगा इसी तरह आदमी शाम को मोमिन रहेगा और सुब्ह को फ़ितनों में पड़कर काफ़िर हो जायेगा यह फ़ितने ऐसे ख़तरनाक होंगे कि इन फ़ितनों के दौर में मोमिन के लिये गोशा नशीनी और अपने घर में छुपकर बैठा रहना बेहतर होगा क्योंकि जो जितना ही इधर उधर फिरेगा वह उसी क़दर ज़्यादा फ़ितनों के तूफ़ान में पड़ेगा यहां तक कि जो

शख़्स बैठा होगा वह चलने वाले से कम फ़ितनों में मुब्तिला होगा और जो चलता होगा वह दौड़ने वाले से कम फ़ितनों का शिकार होगा:- इन फ़ितनों में मुसलमान आपस ही में जंग व जिदाल करेंगे और एक दूसरे की गरदनें काटेंगे इन फ़ितनों के औक़ात में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपनी उम्मत को यह नसीहत फ़रमाते हैं कि जब मुसलमान आपस ही में जंग करने लगें तो तुम ऐसे वक़्त में अपनी कमानों को तोड़ डालना और अपनी कमानों की ताँतों को काट डालना और अपनी तलवारों की धारों को पत्थरों से कुचल कुचलकर तलवारों को कुन्द और गुठ्ठल कर डालना ताकि तुम लोग उस हराम जंग में न मुब्तिला हो जाओ और तुम्हारा हाथ मोमिनीन के ख़ूनों से रंगीन न होने पाये और अगर कोई मुसलमान तुम्हारे घर में घुस कर तुमको बिला क़ुसूर क़त्ल करने लगे तो तुम उस वक़्त में ऐसा ही करना जैसा हज़रते आदम अ़लैहिस्सलाम के दोनों बेटों "हाबील और क़ाबील" में से हाबील ने किया था जो क़ाबील से बेहतर था।

क़ुरआन मजीद:- में है कि जब "क़ाबील" अपनी नफ़सानी ख़ाहिश के जज़्बे से अपने भाई हाबील को क़त्ल करने के लिये आगे बढ़ा तो हाबील ने यह कहा कि अगर तुम हाथ बढ़ाकर मुझपर हमला करोगे तो मैं तुम पर हाथ नहीं उठाऊंगा चुनांचे ज़ालिम क़ाबील ने अपने भाई हाबील को निहायत ही बेदर्दी के साथ क़त्ल कर दिया और वह शहीद हो गये।

हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के इस इर्शाद का यह मतलब है कि अगर कोई मुसलमान उन फ़ितनों के दौरान तुमको बिला क़ुसूर क़त्ल करने लगे तो तुम शहीद हो जाना मगर हरगिज़ हरगिज़ किसी मुसलमान का ख़ून न बहाना।

तम्बीह इस हदीस के बारे मे बड़े बड़े जलीलुल्क़द्र सहाबा व ताबेईन और आम उलमाए इस्लाम ने यह फ़रमाया है कि यह हुक्म कि मुसलमानों की जंग में ख़ुद क़त्ल हो जाये मगर ख़ुद किसी मुसलमान को क़त्ल न करे यह उस शख़्स के बारे में है जिसको यह मालूम न हो सका हो कि मुसलमानों की दोनों जंग करने वाली जमाअ़तों में से कौन हक़ पर है ? और कौन बातिल पर है? लेकिन जिस शख़्स पर यह वाज़िह हो जाये कि मुसलमानों की लड़ने वाली दोनों जमाअ़तों में से फ़लां जमाअ़त हक़ पर है और फ़लां जमाअ़त बातिल पर है तो उस शख़्स पर वाजिब है कि वह अहले हक़ की मदद करे और अहले बातिल से जंग करे क्योंकि क़ुरआन मजीद का हुक्म है कि तुम बाग़ियों से बहर हाल जंग करो ख़्वाह वह मुसलमान हों या काफ़िर:-

(शरहे मुस्लिम जिल्द 2 सफ़हा 389)

तब्सिरा:- तवारीख़े इस्लाम के मुतालिआ़ से पता चलता है कि इस क़िस्म के फ़ितने गुज़श्ता ज़मानों में भी फैल चुके हैं और आइन्दा भी इस क़िस्म के फ़ितने क़यामत से पहले उठते ही रहेंगे और यह फ़ितना तो आज भी समन्दर की तरह उठता और बढ़ता ही चला आ रहा है कि गुमराहों और बद्दीनो की गुमराह कुन तक़रीरों और तहरीरों से, या नफ़सानी ख़्वाहिशों के जज़्बात से सैकड़ों हज़ारों मुसलमान गुमराह होकर मुलहिद व बेदीन, और कुफ़्फ़ार व मुरतद्दीन होते चले जा रहे हैं लिहाज़ा क़यामत की यह निशानी ज़ाहिर हो चुकी है।

अमानत की बरबादी

हदीस (5)

हज़रते अबू हुरैरह रज़िअल्लाहु तआला अन्हु रावी हैं कि इस दरमियान में कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम गुफ़्तगू फ़रमारहे थे कि अचानक एक दिहाती आया और यह कहा कि क़यामत कब आयेगी? हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया कि जब अमानत बरबाद की जाने लगे तो तुम क़यामत का इन्तेज़ार करो उसने कहा कि अमानत की बरबादी किस तरह होगी? आप ने फ़रमाया कि जब हर काम उसके नाअहल की तरफ़ सोंपा जाने लगे तो तुम क़यामत का इन्तिज़ार करो।

(मिशाकत, जिल्द 2 सफ़हा 469)

तशरीह:- यह हदीस बुख़ारी शरीफ़ भाग 2 सफ़हा 961 में भी है हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इस हदीस में दिहाती को क़यामत की यह निशानी बतायी कि जब ना अहलों को काम सुपुर्द किये जाने लगें तो समझलो कि अब क़यामत जल्द ही आने वाली है लिहाज़ा तुम उस वक़्त क़यामत का इन्तिज़ार करो।

तब्सिरा:- क़यामत की यह निशानी भी ज़ाहिर होने लगी है चुनांन्चे देख लीजिये कि हुकूमत व सल्तनत इस दौर में ऐसे लोगों

के सुपुर्द की जाने लगी है जो किसी तरह भी उसके अह्ल नहीं हैं इसी तरह गांव की सरदारी और प्रधानी भी ना अह्लों को दी जारही है हद हो गई कि मस्जिदों की तवलियत और इन्तिज़ाम उन बेनामाज़ी सेठों और मालदारों के सुपुर्द किया जा रहा है जो ईद व बक़रईद या ज़्यादा सेज़ियादह जुमा की नमाज़ पढ़ने के लिये मस्जिदों में आते हैं यूं ही दीनी दर्सगाहों और क़ौमी इदारों में ऐसे ऐसे लोगों को मनीजर, व नाज़िमे आला और सिकरेट्री का ओहदा सुपुर्द करदिया गया है जो इल्मे दीन और क़ौमे मुस्लिमके मसाइल और ज़रूरियात से बिल्कुल ही नावाक़िफ़ हैं बल्कि बाज़ तो इल्मे दीन और क़ौम के दुश्मन हैं इसी तौर पर मदारिसे अरबिया में ऐसे ऐसे लोग मुफ़्ती और शैख़ुल हदीस की मसनदों पर बिठाये गये हैं जो दरहक़ीक़त इन ओहदों के अह्ल नहीं हैं ग़र्ज़ की हर काम इस ज़माने में ना अह्लों और नालाइक़ों के सुपुर्द किया जा रहा है लेकिन अभी ख़ैरियत यह है कि कुछ लोग इन ओहदों के अह्ल भी मौजूद हैं मगर जब वह वक़्त आ जायेगा कि हर छोटा बड़ा काम नाअह्लों ही के हाथों में पहुंच जायेगा तो फिर समझलो कि सिगनल डाऊन हो चुका है और क़यामत की गाड़ी अब आने वाली है।

ज़ाहिर है कि ना अह्लों के हाथों में दुनिया के तमाम कामों का पहुंच जाना इसका अंजाम दुनिया को बरबादी के सिवा और क्या होगा? कौन नहीं जानता कि अच्छी से अच्छी चीज़ अगर ना अह्ल के हाथमें पहुच जाये तो वह बद से बदतर होती जाती है।

अस्तुरा कितनी अच्छी चीज़ है कि इससे इन्सान के सर और चेहरा की इस्लाह और ख़ूब सूरती पैदा की जाती है मगर अस्तुरा उस वक़्त तक अच्छी चीज़ है जब तक नाई के हाथ में है और

अगर ख़ुदा न ख़ास्ता: यही उस्तुरा बन्दर के हाथ में पहुंच जाये तो फिर ज़ाहिर है कि उससे हजामत नहीं बनेगी बल्कि किसी की नाक कटेगी और किसी की गरदन बल्कि यह भी मुम्किन है कि उस्तुरा ही रहे न बन्दर दोनों ही का सत्तयानास हो जाये।

मस्जिदों पर फ़ख़्र

हदीस (6)

हज़रते अनस रज़िअल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़यामत नहीं क़ायम होगी यहां तक कि लोग मस्जिदों के बारे में एक दुसरे पर फ़ख़्र करेंगे।

(हुज्जतुल्लाहि अललआलमीन जिल्द 2 सफ़हा 830)
(बहवाला मुस्नदे इमाम अहमद)

तशरीह:– यानी जब क़यामत आयेगी तो मुसलमान एक दूसरे से बढ़चढ़कर बड़ी बड़ी शानदार मस्जिदें बनाएंगे और फिर उन मसाजिदों पर एक दुसरे के मुक़ाबिला में फ़ख़्र ज़ाहिर करेंगे और यूं कहेंगे कि मेरी मस्जिद तुम्हारी मस्जिद से ऊंची और ज़्यादा शानदार है मेरे बाप दादा की बनायी हुई मस्जिद तुम्हारे बाप दादा की मस्जिद से ज़्यादा अच्छी ज़्यादा ख़ुबसूरत है मेरे गांव की मस्जिद

तुम्हारे गांव की मस्जिद से बहुत ज़्यादा लम्बी चौड़ी है वग़ैरह वग़ैरह।

मस्जिदों को इस नीयत से ऊंची, पोख़्ता और शानदार बनाना कि यह इस्लाम का निशान हैं और इसमें कुफ़्फ़ार की नज़रों में इस्लाम की अज़मत व हैबत पैदा होगी और अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इसमें ख़ुश होंगे यह बहुत बड़े सवाब का काम है लेकिन अगर कोई शख़्स दुसरों पर फ़ख़्र व तकब्बुर ज़ाहिर करने और अपनी बड़ाई की नीयत से शानदार मस्जिद तामीर करे तो हरगिज़ हरगिज़ उसको कोई सवाब नहीं मिलेगा बल्कि वह गुनाहगार होगा और यही वह सूरत है जिसको हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि यह क़ुर्बे क़यामत की निशानी है

क़यामत की इस निशानी का ज़ुहुर होने लगा है क्योंकि बाज़ मस्जिदें इसी फ़ख़्र और दुसरों पर अपनी बड़ाई ज़ाहिर करने ही की नीयत से बनायी जाने लगी हैं

"वल्लाहु तआला आलम"

अमीरूल मुमिनीन का क़त्ल

हदीस (7)

हज़रते हुज़ैफ़ा रज़िअल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वस्सलाम ने

फ़रमाया कि क़यामत नहीं क़ायेम होगी यहां तक कि तुम लोग अपने इमाम (अमीरूल मुमिनीन) को क़त्ल करोगे और आपस में एक दुसरे के साथ तलवारों से जंग करोगे और तुम्हारे बदतरीन लोग तुम्हारी दुनिया के वारिस होंगे

(मिशकात जिल्द 2 सफ़हा 459)

तशरीह– यह हदीस तिर्मीज़ी जिल्द 2 सफ़हा 29 बाब। अम्रबिल माअ़रूफ़ में भी है

इस हदीस में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने क़यामत की इस निशानी के ज़ुहूर की ख़बर दी है कि मुसलमान खुद अपनी तलवारों से अपने अमीरूल मुमिनीन को क़त्ल करेंगे और मुसलमान आपस ही में तलवारों से जंग करेंगे और दुनिया की दौलत और सल्तनत व हुकूमत बदतरीन इन्सानों के हाथों में आ जायेगी

तब्सिरा :– क़यामत की यह निशानियां ज़ाहिर हो चुकीं और क़यामत से पहले आइन्दा भी इन निशानियों का मज़ीद ज़हुर होगा तारीख़े इस्लाम गवाह है कि सब से पहले मिस्र के चन्द मनहूस और बाग़ी मुसलमानों ने 35 हिज० में अमीरूल मुमिनीन हज़रते *"उसमाने ग़नी"* रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को शहीद कर डाला फिर 40 हिज० में बदनसीब अ़बदुर्रहमान बिन मुलजिम मोरादी की तलवार से अमीरूल मुमिनीन हज़रते अ़ली बिन अबी तालिब रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने जामे शाहादत नोश फ़रमया फिर यज़ीदे पलीद के दौरे हुकूमत में 10 मुहर्रमुल हराम 61 हिज० को

मुसलमानों ही ने हज़रते इमाम हुसैन रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को करबला के मैदान में शहीद किया फिर इसके बाद अब्बासियों के दौरे हुकूमत में तो खुलफ़ा और अमीरूल मुमिनीन के क़त्ल का ताँता बंध गया और मुसलमानों की ख़ाना जंगी का यह आ़लम हुआ कि अमीरूल मुमिनीन हज़रते उसमाने ग़नी रज़िअल्लाहु ताअ़ला अ़न्हु की शहादत के बाद जो लड़ाइयों का सिलसिला शुरू हुआ तो बढ़ते बढ़ते यह नौबत पहुंच गयी कि ख़ानदाने बनू ओमय्या के कुछ बद तरीन इन्सानों के हाथों में सल्तनत की बाग डोर आ गयी और बार बार की खूँरेज़ लड़ाइयों और ख़ाना जंगियों में मक्का, मदीना और शाम व इराक़ के बेशुमार मुसलमान–मुसलमानों ही की तलवारों से क़त्ल हुये जो तारीख़े इस्लाम के वह औराक़े ग़म हैं कि जिनके तसव्वुर ही से एक दर्दमन्द और हस्सास मुसलमान लरज़ह बर अन्दाम हो जाता है।

चुनांन्चे 63 हिज० में यज़ीद पलीद ने मुस्लिम बिन उक़बा को 20 हज़ार लशकर का सिपह सालार बना कर मदीना मुनौव्वरह पर चढ़ायी का हुक्म दिया और इस लशकरे अशरार ने रसूल के दरबार मदीना मुनौव्वरह के कूचा व बाज़ार में वह तूफ़ान बरपा किया कि जिसको देखकर कुफ़्फ़ार भी नादिम व शर्मसार हो जायें उन खूंख़ारों ने मुसलमान होते हुये सात सौ 700 सहाबए किराम को इन्तिहायी बेदर्दी के साथ शहीद किया और दूसरे आ़म मुसलमानों को मिलाकर दस हज़ार 10000 मुसलमानों को ज़बह कर डाला फिर यही ज़ालिमों का लशकर मक्का मुकर्रमा पर हमला आवर हुआ और बद बातिनों ने हरमें इलाही में जहां एक परिन्दा

का ख़ून बहाना भी जायज़ नहीं है मुसलमानों को क़त्ल किया और ख़ानए क़ाअ़बा पर निजासत डाली फिर क़ाअ़बा मुअ़ज़्ज़मा में आग लगा दी जिससे काअ़बा मुअ़ज़्ज़मा की छत और ग़िलाफ़ जल गया यहां तक कि ख़ानए काअ़बा के तमाम तबर्रूकात को जला डाला उन्ही तबर्रूकात में हज़रते इस्माईल अ़लैहिस्सलाम के फ़िदया में क़ुर्बानी किये हुये दुम्बा की वह सींग भी जल गये जो सैकड़ों बरस से काअ़बा मुकर्रमा में बतौरे तबरूर्क रक्खे हुये थे।

फिर 73 हिज० में बनू उमय्यह के बादशाह अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान ने हज्जाज बिन यूसुफ़ सक़फ़ी ज़ालिम के साथ एक अ़ज़ीम लशकर मक्का मुकर्रमा भेजा और इस लशकर ने हरमें इलाही में हज़ारों मुसलमानों को ज़बह कर डाला और हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि़अल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु जो ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन थे और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के फूफी ज़ाद भाई हज़रते ज़ुबैर इब्नुल अ़व्वाम जन्नती सहाबी के फ़रज़न्द, और अमीरूल मुमिनीन हज़रते अबू बकरे सिद्दीक़ रिज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु के नवासे थे हज्जाज बिन यूसूफ़ ज़ालिम की फ़ौजों ने उस मुक़द्दस और बुज़ुर्ग सहाबी को शहीद करके उनकी लाशे मुबारक को सूली पर चढ़ा दिया।

अल्गर्ज़ इसी तरह लगातार ख़ाना जंगियों का सिलसिला जारी रहा और हज़ारों बल्कि लाखों मुसलमान मुसलमानों ही के हाथों क़त्ल होते रहे जिनकी तफ़सील तहरीर करने के लिये एक बहुत बड़े दफ़्तर की ज़रूरत है हमारी इस किताब का तंग दामन इन वाक़िआ़त को समेट ने से क़ासिर है:-

कमीनों की ख़ुशहाली

हदीस (8)

> हज़रते हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ि़अल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मरवी है उन्होने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़यामत कायम न होगी यहां तक कि कमीने का बेटा कमीना सबसे ज़्यादा दुनिया में ख़ुशहाल होगा
>
> *(तिर्मीज़ी जिल्द 2 सफ़हा 44, बाब अशरा तुस्साअ़त)*

तशरीह:- इस हदीस में हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने क़यामत की एक ख़ास अ़लामत और मख़सूस निशानी का ज़िक्र फ़रमाया है कि क़ुर्बे क़यामत में वह लोग जो बाप, दादा वग़ैरह के ज़माने से नसलन बाद नसलिन कमीने, अहमक़, और लुच्चे लफंगे होंगे वह दुनिया में माल व दौलत और असर व रूसूख़ नीज़ दुनियावी साज़्व सामान के लिहाज़ से बहुत ही ख़ुशहाल होंगे और जो जितना ही बड़ा कमीना और लुच्चा होगा उसी क़दर ज़्यादा वह ख़ुशहाल होगा

तब्सिरा:- इस ज़माने में क़यामत की यह निशानी इस तरह ज़ाहिर हो चुकी है कि हर छोटा बड़ा इसको अपनी आंखों से देख

रहा है कि पुश्तहा पुश्त के शरीफ़ ज़ादगान, उलमा, सुलहा, ओक़ला दीनदार मुसलमान आज ग़ुर्बत व अफ़लास का शिकार और दुनिया में हर तरफ़ ज़लील व ख़्वार नज़र आ रहे हैं और क्यी क्यी पुश्तों के चोर, डाकू लुच्चे, लफंगे और बदमाश ऐश व इशरत की जन्नत में चैन कर रहे हैं और मज़े उड़ा रहे हैं जिनको देखकर बे इख़्तियार ज़बान पर यह शेअ़र आ जाता है कि

हूर की गोद में लंगूर ख़ुदा की क़ुदरत।
ज़ाग़ की चोंच में अंगूर ख़ुदा की क़ुदरत।।

इस वक़्त मुझे ग़ुस्सा आ रहा है जी चाहता है कि ऐसे चन्द कमीनों के चेहरों से निक़ाब उठाकर नाज़िरीन से उनका तआ़रूफ़ करा दूं मगर डर लगता है कि!

मैं जो असरारे हक़ीक़त कभी ज़ाहिर कर दूं
अभी बेदम रसनो दार का सामां हो जाए

उ़लमा क़त्ल किये जायेंगे

हदीस (9)

हज़रते अ़ली कर्मल्लाहु वजहहू ने फ़रमाया कि लोगों पर एक ऐसा ज़माना आयेगा कि उसमें उ़लमा कुत्तों की तरह क़त्ल किये जायेंगे तो काश उ़लमा उस ज़माने में बेवक़ूफ़ बन जाते ताकि क़त्ल से बच जाते।
(हुज्जतुल्लाह जिल्द2 सफ़हा829) बहवालादैलमी

तब्सिरा:– क़यामत की यह अ़लामत पुरी हो चुकी इस लिये कि कई दौर ऐसे गुज़र गये कि हक़गो (हक़ कहने वाले) उ़लमा को ज़ालिम हुकूमतों ने बिला क़ुसूर कुत्तों की तरह क़त्ल कराया बिलख़ुसूस बनी उम्मैया: के दौरे हुकूमत में हज्जाज बिन यूसुफ़ सक़फ़ी ने हज़ारों उ़लमाए किराम को क़त्ल किया और हुकूमते अ़ब्बासिया के ज़माने में मामून रशीद और उसके भाई मुअ़तसिम बिल्लाह की सल्तनत में हज़ारों उ़लमा की गरदने मारी गयीं इसी तरह इस सदी में भी कम्यूनेस्ट हुकूमत ने रूस में और मुल्हिदीन की हुकूमतों ने मिस्र व इराक़ में हज़ारों उ़लमाए केराम को फाँसियां दे दीं।

हज़रते अ़ली रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने यह तमन्ना ज़ाहिर फ़रमायी कि काश उस ज़माने के उ़लमाए किराम ऐसे वक़्त में जाहिल व अहमक़ और पागल बन जाते ताकि ज़ालिम हुकूमतें उन्हें जाहिल और पागल समझकर क़त्ल न करतीं और इस तरह उम्मते रसूल के उ़लमा की क़ीमती जानें बच जातीं।

चुनांन्चे तारीख़ों से पता चलता है कि कुछ आ़लिमों ने ऐसे वक़्तों मे हज़रते अ़ली रज़िअल्लाहु अ़न्हु के बताये हुये नुस्ख़े पर अ़मल करके अपनी जान बचाली है।

दीन से निकल जाने वाली क़ौम

हदीस (10)

हज़रते अ़ब्दुल्लाह रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मरवी है उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया की आख़िरी ज़माने में एक क़ौम निकलेगी जो नौ उम्र और बे अ़क्ल होगी यह लोग क़ुरआ़न पढ़ेंगें मगर क़ुरआ़न उनके हुलक़ूम (हल्क़) के नीचे (दिल तक) नहीं पहुंचेगा यह लोग बेहतरीन मख़्लूक़ (नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की बातें कहेंगे लेकिन यह लोग दीन से इस तरह निकल जायेंगे जिस तरह तीर शिकार से (बदन को छेद कर) निकल जाता है।

(तिर्मिज़ी जिल्द 2 सफ़्हा 42)

तशरीह:- यह हदीस बुख़ारी व मुस्लिम में भी कई जगह मज़कूर है इस हदीस में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने क़यामत की निशानियों में से एक निशानी यह बतायी है कि क़ुर्बे क़यामत के वक़्त कुछ नई उमरों वाले कम अ़क्ल लोग टोलियां बना कर निकलेंगे यह लोग क़ुरआन पढ़ेंगे मगर क़ुरआन उनके हुल्क़ूमों से आगे बढ़कर उनके दिलों तक नहीं पहुंचेगा यानी क़ुरआन मजीद की हिदायत के असरात उनके दिलों में नहीं होंगे यह लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की हदीसें लोगों को सुनाते फ़िरेंगे लेकिन इसके बावजूद यह लोग दीन से इस तरह निकल जायेंगे कि जिस तरह किसी परिन्दा या किसी चरिन्दा जानवर का तीर से शिकार किया जाता है तो तीर शिकार के जानवर को छेदता हुआ

बाहर निकल जाता है और शिकार के ख़ून या गोश्त का कोई असर और निशान तीर पर लगा हुआ नज़र नहीं आता इसी तरह यह लोग इस्लाम में दाख़िल होकर इस तरह इस्लाम से निकल जायेंगे कि इस्लाम का कोई असर व निशान उन लोगों में बाक़ी नहीं रहेगा और यह लोग बिल्कुल ही इस्लाम से ख़ारिज और मुर्तद व बेदीन हो जायेंगे।

तब्सिरा:- क़यामत की यह निशानी भी ज़ाहिर हो चुकी एक हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने उस क़ौम का नाम भी बता दिया है कि यह ख़ार्जियों का फ़िरक़ा है यह लोग हज़रते अ़ली और हज़रते मुआ़विया रज़िअल्लाहु अ़नहुमा की लड़ाइयों के वक़्त में ज़ाहिर हुये और हज़रते अ़ली रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने उस फ़िर्क़ा वालों से "नहरवान" में जिहाद फ़रमाया और उन लोगों का क़त्ले आ़म किया फिर भी कुछ बाक़ी बच गये और उन लोगों ने मक़ामे "हरुरा" में जो इराक़ में है अपना एक मज़बूत अड्डा बना लिया इसी लिये यह लोग "फ़िर्क़ए हरुरीयह" कहलाने लगे फ़िर उस फ़िर्क़ा की बहुत सी शाख़ें हो गयीं जिन में फ़िरक़ए मुअ़तज़िला को बहुत ज़्यादा शुहरत हासिल हुयीं यहां तक कि उन लोगों का इक़्तिदार शाही दरबारों में भी बहुत बढ़ गया और उन लोगों ने उ़लमाए अहले सुन्नत को बड़ी बड़ी सज़ाएं देकर ख़ूब ख़ूब अपने बातिल मज़हब का प्रचार किया और इस्लाम को बेहद नुक़्सान पहुंचाया और उन्हीं ख़ारजियों की एक शाख़, फ़िर्क़ए वहाबिया: भी है बानी "इब्ने अ़ब्दुल वहाब नजदी" है इस फ़िर्क़ए वहाबिया के बुरे असरात से हिन्दुस्तान की सरज़मीन भी मसमूम हो गयी कि इसकी मुख़्तलिफ़ टोलियां ग़ैर मुक़ल्लिद,

देवबन्दी, "तबलीग़ी जमाअ़त" "जमाअ़ते इस्लामी" वग़ैरह नामों से हिन्दुस्तान भर में फैली हुइ हैं इन लोगों के अक्सर मसाइल और इन लोगों की अ़लामत व ख़साइल बहुत ज़्यादा ख़वारिज से मिलते जुलते हैं और इन लोगों में से बहुत से लोग क़ुरआन पढ़ने और अहादीस सुनाने के बावुजूद हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की तौहीन करके इस्लाम से ख़ारिज और मुर्तद हो गये।

चुनांन्चे अ़रबो अ़जम के मुफ़्तियों ने इन लोगों के बारे में कुफ़्र का फ़तवा दिया है देखो फ़तावा "हुसामुल हरमैन" मुरत्तबा आला हज़रत मौलाना शाह अहमद रज़ा साहब क़िब्ला बरेलवी क़ुद्दस: सिर्रूहुल अ़ज़ीज़।

हजरे असवद उखाड़ा जायेगा

(हदीस 11)

> हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ियल्लाहु अ़नहुमा ने फ़रमाया कि क़यामत नहीं क़ायम होगी यहां तक कि रूक्न (हजरे असवद) को उसकी जगह से उठा लिया जायेगा इस हदीस को सिजज़ी मुहद्दिस ने रिवायत किया है
>
> *हुज्जतुल्लाह जिल्द 2 सफ़हा 829*

तब्सिरा:– क़यामत की यह निशानी ज़ाहिर हो चुकी क्योंकि

ख़िलाफ़ते अ़ब्बासिया के दौर में एक मुल्हिद और बाग़ी "अबू ताहिर क़रम्ती" ने मक्का मुअ़ज़्ज़मा पर चढ़ायी करके उस मुक़द्दस शहर पर क़ब्ज़ा कर लिया और ख़ास ज़िलहिज्ज: की आठवीं तारीख़ को मस्जिदे हराम के अन्दर हज़ारों हाजियों को क़त्ल करडाला और हजरे असवद पर अपना गुरूज़ मारकर उस मुक़द्दस पत्थर को तोड़ डाला फिर उस को उखाड़ कर वह अपने दारूल सल्तनत "हजर" में ले गया और बीस 20 बरस तक हजरे असवद काअ़बा मुअ़ज़्ज़मा से जुदा होकर "हजर" में पड़ा रहा फिर अ़ब्बासी ख़लीफ़ा "मुतीअ़" के ज़माने में जब "अबू ताहिर क़रम्ती" के मुत्तबेईन मग़लूब हो गए तो हजरे असवद शरीफ़ "हजर" से लाकर फिर काअ़बए मुअ़ज़्ज़मा के एक कोने में बदस्तूरे साबिक़ (पहले की तरह) दीवार में जोड़ दिया गया।

रिवायत है कि जब "अबू ताहिर क़रम्ती" उस मुक़द्दस पत्थर को ऊंट पर लादकर "हजर" ले जाने लगातो जिस ऊंट पर उसको लादा जाता वह ऊंट मर जाता यहां तक कि मक्का मुकर्रमा से हजर तक का रास्ता तय करने में चालीस 40 ऊंट मरगये ओर जब उस पत्थर को "हजर" से मक्का बीस 20 साल के बाद लाया गया तो एक लाग़र ऊंटनी पर उसको लादा गया और वही एक ऊंटनी उसको मक्का मुअ़ज़्ज़मा लेकर चली आयी और उसकी बरकत से मक्का मुकर्रमा पहुंचकर यह ऊंटनी ख़ूब फ़र्बा (मोटी ताज़ी) हो गयी।

अबू ताहिर क़रम्ती अपने वक़्त का फ़िरऔ़न था मुहम्मद बिन रबीअ़ह बिन सुलैमान का बयान है कि जिस साल क़रम्ती का मक्का

मुअ़ज़्ज़मा पर ग़ल्बा हो गया मैं मक्का मुकर्रमा ही मैं मौजूद था मैंने यह देखाकि उन लोगों में का एक आदमी काअ़बा मुअ़ज़्ज़मा पर चढ़गया और काअ़बा का परनाला जो चांदी का बना हुआ है उसको उखाड़ने लगा मैं यह मनज़र देखकर तड़प गया और मुझसे सब्र न हो सका तो मैंने यह कहा कि ए मेरे परवरदिगार तू क्या ही हलीम है मेरे मुहं से यह लफ़्ज़ निकला ही था कि वह शख़्स सरके बल ज़मीन पर गिर पड़ा और मर गया और मुहम्मद बिन रबीअ़ कहतें हैं कि अबू ताहिर क़रम्ती मस्जिदे हराम के मिम्बर पर चढ़ कर यह कहने लगा कि मैं ख़ुदा की कसम! मख़लूक़ को पैदा भी करता हूं और उनको फ़ना भी करता हूं इसके बाद ही अबू ताहिर को ऐसी ख़तरनाक चेचक निकली कि उसका सारा बदन सड़गल कर टुकड़े टुकड़े हो गया

(हुज्जतुल्लाहि अ़लल आ़लमीन जिल्द 2 सफ़हा 829)

तारे सरों पर गिरेंगे

हदीस (12)

हज़रते इब्ने अ़ब्बास रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़नहुमा ने फ़रमाया कि क़यामत नहीं क़ायम होगी यहां तक कि कुछ क़ौमों के सर आसमान के सितारों से कुचल दिये जायेंगे इस लिये कि वह क़ौमे लूत के अ़मल (लवातत) को हलाल समझने लगेंगे !

(हुज्जतुल्लाह जिल्द 2 सफ़हा 829)

तब्सिरा:- क़यामत की इस निशानी का ज़ुहुर भी हो चुका है चुनांन्चे 323 हिज० में जब कि अ़ब्बासी ख़लीफ़ा राज़ी बिल्लाह का दौरे हुकूमत था रात भर तारे टूट टूट कर ज़मीन पर गिरते रहे और उसके बाद भी कई बार आसमान में शहाबे साक़िब गिरते रहे और इन्सानों के सर कुचल कुचल कर उनकों हिलाक करते रहे *(हुज्जतुल्लाह जिल्द 2 सफ़हा 829)*

लवातत:- गुनाहे कबीरा है और यह वह मलऊन काम है कि क़ौमे लूत इसी गुनाहे कबीरा की वजह से इस तरह हिलाक करदी गयी कि उसकी पूरी बस्ती पर पहले पत्थरों की बारिश हुयी फिर वह बस्ती उलट पलट करदी गयी *(क़ुरआ़न मजीद)*

इस हदीस में भी हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने यह ख़बर दी कि जो लोग इस फ़ेले हराम (हराम काम) को हलाल समझने लगेंगे उनके सर टूटने वाले तारों से कुचल डाले जायेंगे और वह हिलाक कर दिये जायेंगे।

हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि लवातत करने वालों पर ख़ुदा की लानत है और हज़रते इब्ने अ़ब्बास रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मन्क़ूल है कि हज़रते अ़ली रज़िअल्लाहु अ़न्हो ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में लवातत करने वालों को यह सज़ा दी कि फ़ाएल (काम करने वाला) मफ़ऊल (काम करवाने वाला) दोनों को आग में जला डाला और हज़रते अबू बकरे सिद्दीक रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में लवातत करने वाले फ़ाएल व मफ़ऊल दोनों को ज़मीन पर बिठाकर उनके ऊपर एक दीवार गिरादी और यह दोनों दब कर मर गये। *(मिश्कात जिल्द 2 सफ़हा 313)*

बेहयायी की इन्तिहा

हदीस (13)

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़िअल्लाहु अ़नहुमा ने फ़मरया कि क़यामत नहीं क़ायम होगी यहां तक कि लोग जानवरों की तरह रास्तों में जुफ़्ती करेंगे।
(हुज्जतुल्लाह जिल्द 2 सफ़हा 831)

तब्सिरा:— क़यामत की इस निशानी के आसार भी ज़ाहिर होने लगे हैं क्योंकि एलानिय: ज़ेनाकारी की वारदातें जा बजा होने लगी हैं यहां तक कि सड़कों पर और मेलों में इस क़िस्म के वाक़िआ़त होने लगे हैं ज़ाहिर है कि जब इन्सानों में रोज़ बरोज़ बेहयायी बढ़ती जा रही है और शर्म व हया का जनाज़ा निकलता जा रहा है तो उसका अन्जाम यही होगा क़ि इन्सान एक दिन इस क़दर बेहया और बेशर्म हो जायेगा कि वह घोड़ों, गदहों, कुत्तों की तरह आ़म रास्तों में अपनी शह्वत पुरी करने लगेगा।

तुर्कों से जंग

हदीस (114)

हज़रते अबू हरैरा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मरवी है उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि क़यामत नहीं कायम होगी यहां तक कि तुम (मुसलमान) एक ऐसी क़ौम से जंग करोगे जिनके जूते बाल के होंगे और यहां तक कि तुम लोग तुर्कों से जंग करोगे जिनकी आंखे छोटी, जिनके चेहरे सुर्ख़, जिनकी नाकें पस्त होंगी गोया उनके चेहरे तह बतह खाल चढ़ायी हुई ढाल होंगे।
(मिश्कात जिल्द 2 सफ़हा 465)

तशरीह :— इस हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने क़यामत की यह निशानी बतायी कि क़यामत से पहले मुसलमानों की तुर्क काफ़िरों से जंग होगी और उस क़ौम का हुलिया बताते हुये आपने इर्शाद फ़मरया कि यह लोग बाल के जूते पहने हुये होंगे।

इसका दो मतलब हो सकता है एक तो यह कि यह लोग जानवारों के बालों को बटकर धागा बनायेंगे और उन धागों से मोज़े की तरह जूता बनाकर पहनेंगे और इसका मतलब यह भी हो सकता है कि यह लोग ऐसे चमड़ों का जूता पहने होंगे जिस पर बाल होंगे उन लोगों की आंखें अ़रबों की आंखों की बनिस्बत छोटी होंगी और उन के चेहरे सुर्ख़ रन्ग के होंगे जो गोलाई लिए हुए होंगे और उन लोगों की नाक छोटी और पस्त होगी और उन लोगों के चेहरों पर इस क़दर गोश्त भरा होगा जैसे तह बतह चमड़ा चढ़ायी हुयी गोल मटोल मोटी ढाल।

तब्सिरा:– यह हदीस शरीफ़ मुख़्तलिफ अलफ़ाज़ के साथ बुख़ारी शरीफ़ के चन्द अबवाब में मज़कूर है और मुस्लिम जिल्द 2 सफ़हा 395 बाब अशरातुस्साअ़त में भी है।

इस हदीस के बारे में शैख़ मोहीयुद्दीन अबू ज़करिया यहया बिन शर्फ़ नुववी (मुतवफ़्फ़ी 676 हिज०) का बयान है कि क़यामत की यह निशानी मअ़रिज़े वुजूद में आ चुकी क्योंकि तुर्कों से बारहा मुस्लिम अफ़वाज की जंग हो चुकी बल्कि इस वक़्त भी हो रहे है यह हदीस हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का मुअ़जिज़ा है कि आपने तुर्कों का हुलिया बयान फ़रमाते हुये उन लोगों से मुसलमानों की जंग और लड़ाइयों की ख़बर दी जो बिला शुबहा ग़ैब की ख़बरें हैं।

(शरहे मुस्लिम लिल नुववी जिल्द 2 सफ़हा 395)

एक कज़्ज़ाब, एक मुह्लिक

हदीस (15)

हज़रते इब्ने उमर रज़िअल्लाहु अ़न्हु रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़बीलये सक़ीफ़ में एक कज़्ज़ाब और एक मुह्लिक (बहुत ज़्यादा ख़ूँरिज़ी करने वाला) पैदा होगा।

(तिर्मीज़ी जिल्द 2 सफ़हा 45)

तशरीह:– इस हदीस का हासिल यह है कि क़यामत से पहले अ़रब के एक क़बीला में जिसका नाम सक़ीफ़ है एक कज़्ज़ाब (बहुत ही झूठा) और एक मुहलिक (बहुत ज़्यादा क़तल करने वाला) पैदा होगा यह, ग़ैब जान्ने वाले नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपनी उम्मत को बरसों पहले ग़ैब की ख़बर दी है।

तब्सिरा:– हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की यह ख़बरे ग़ैब वजूद में आ चुकी।

इमामे तिर्मीज़ी का बयान है कि मुहद्देसीन व मुवर्रेख़ीन का यह क़ौल है कि क़बीलए सक़ीफ़ का कज़्ज़ाब तो "मुख़्तार बिन उबैद" है और क़बीलए सक़ीफ़ का मुह्लिक हज्जाज बिन यूसुफ़, है।

(तिर्मीज़ी जिल्द 2 सफ़हा 45)

मुख़्तार बिन उबैद सक़फ़ी इसके बाप बहुत ही बुलन्द पाया सहाबी थे मगर यह सहाबी नहीं है इसकी पैदाइश 1 हिज० में हुयी मगर इसको हुज़ूर नबीये करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का दीदार नसीब नहीं हुआ इस में शक नहीं कि यह बहुत बड़ा आ़लिम व फ़ाज़िल था और अहले बैत का मुहिब भी था लेकिन कुछ दिनों के बाद उस पर हुकूमत की हिर्स व हविस का भूत सवार हो गया और यह अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़िअल्लाहु अ़न्हु का बाग़ी बन गया और चन्द दिनों के लिये इसको कूफ़ा में तसल्लुत व इक्तिदार भी मिल गया और इसने हज़रते इमामे हुसैन रज़िअललहु अ़न्हु के क़ातिलों से ख़ूब ख़ूब बदला भी लिया मगर फिर इसके अ़क़ाइद में इस क़दर ख़राबी पैदा हो गयी कि नुबूवत का दावा करने लगा और यह कहने लगा कि मुझ पर वही उतरती है यहां तक कि हज़रते

मुस्अ़ब बिन ज़ुबैर के दौरे एमारत में यह कूफ़ा के अन्दर क़त्ल कर दिया गया

(हाशिया तिर्मीज़ी जिल्द 2 सफ़हा 45)

हज्जाज बिन यूसुफ़ सक़फ़ी :- सल्तनते बनू उमय्या का वह ज़ालिम व खूंखार गवरनर है जिस ने बिग़ैर जंग के जिन लोगों को पकड़ पकड़कर और गिरफ़्तार करके क़त्ल किया उनकी तादाद एक लाख बीस हज़ार 1,20,000 है और उन मक़तूलों में अकसर वह लोग है जो आ़ला दरजे के आ़बिद व ज़ाहिद, उलमा और सुलहा ताबेयीन थे और जंगों में जो लोग उसके हुक्म से क़त्ल किये गये उनकी तादाद तो शुमार से बाहर है (तिर्मीज़ी जिल्द 2 सफ़हा 45)

रिवायत है कि हज्जाज बिन यूसुफ़ की मौत के बाद एक आदमी ने अपनी बीवी से यह कह दिया कि "अगर हज्जाज बिन युसूफ़ जहन्नमी न हो तो तुझको तलाक़" इसके बाद उस आदमी ने अपने ज़माने के उलमा से दरियाफ़्त किया कि मेरी बीवी पर तलाक़ पड़ी या नहीं? तो उलमा ने उसका कोई जवाब नहीं दिया फ़िर उस आदमी ने एक अल्लाह के वली से यह मसला पूछा जो साहबे कश्फ़ व करामात थे तो उन्होने फ़रमाया कि तेरी बीवी पर तलाक़ नहीं पड़ी क्योंकि हज्जाज बिन यूसुफ़ जहन्नमी है। *(तक़रीर तिर्मीज़ी सफ़हा 51)*

तलवारें जिहाद से मुअ़त्तल

हदीस (16)

हज़रते अबू हुरैरा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मरवी है कि क़यामत की अ़लामतों में से यह हैं 1- पड़ोसियों के साथ बुरा सुलूक करना 2- रिश्तेदारियों को काट देना 3- तलवार का जिहाद से मुअ़त्तल हो जाना 4- दीन के ज़रिए दुनिया कमाना

(हुज्जतुल्लाह जिल्द 2 सफ़हा 831)

तब्सिरा:- क़यामत की मज़्कूरा बाला चारों निशानियां तमाम दुनिया में अ़लल एलान ज़ाहिर हो चुकी हैं कौन नहीं जानता कि आज दुनिया का हर पड़ोसी अपने पड़ोसियों की बदसुलूकियों से नालां और बेज़ार है इसी तरह ज़रा ज़रा सी बातों पर आज भाई अपनी बहन से यह कहकर रिश्ता काट डालता है कि जा आज से तू मेरी बहन नहीं हाय अफ़सोस! अल्लाह तआ़ला ने तो भाई बहन का रिश्ता जोड़ा था ताकि एक दुसरे से मुहब्बत व उलफ़त का बरताव करके एक दुसरे का सहारा बने मगर अल्लाह के बन्दे इस क़ुदरती रिश्तों को काट कर एक दुसरे के दुशमन बने हुये हैं इसी तरह जिहाद तमाम दुनिया में बन्द हो चुका है और तलवारें जिहाद से मुअ़त्तल पड़ी हुयी ख़ुदा की राह में मियानों से निकलने के लिये बेक़रारी के साथ तड़प रही हैं इसी तरह बद अ़मल उलमा और मसनूई मशाइख़ दीन के नाम पर जिस तरह अ़वाम का

इस्तेहसाल कर रहे हैं और रूपया कमाने की मशीन बनें हुये हैं मुझे अफ़सोस है कि इसकी तस्वीर कशी के लिये मेरे पास अलफ़ाज़ नहीं है।

दजला के पुलपर जंगे अज़ीम

हदीस (17)

हज़रते अबू बक्र: रज़िअल्लाहु अन्हु का बयान है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत के कुछ लोग एक पस्त ज़मीन में उतर पड़ेंगे जिसका नाम बसरा है उस नहर के पास जिसको दज्ला कहा जाता है उस नहर पर एक पुल होगा और उस शहर की आबादी बहुत ज़्यादा होगी और यह मुसलमानों के शहरों में से एक शहर होगा जब आख़िरी ज़माना आयेगा तो "क़नतुरा" की औलाद (तातारी क़ौम) चौड़े चौड़े चेहरों वाले, छोटी छोटी आंखों वाले हमला के लिये आकर उस नहर के कनारे पड़ाव करेंगे उस वक़्त बसरा वालों के तीन गिरोह हो जायेंगे एक गिरोह तो बैलों की दुम पकड़े हुये ब्याबानों में पनाह लेगा और यह सब हिलाक हो जायेंगे और एक गिरोह अपनी ज़ात के लिये अमान लेगा यह सब भी हिलाक हो जायेंगे और एक गिरोह अपने बाल बच्चों को अपनी पीठ के पीछे करके उन लोगों से जंग करेगा

और यह लोग "शुहदा" होंगे।

(मिशकात जिल्द 2 सफ़हा 468)

तशरीह:– इस हदीस को अबू दाऊद ने भी नक़ल फ़रमाया है इस हदीस में "क़नतूरा" की औलाद से मुराद तुर्की और तातारी क़ौमें हैं क़नतूरा हज़रते इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की बांदी का नाम है हज़रते इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के जो लड़के क़नतूरा के शिकम से पैदा हुये थे उनकी औलाद में तुर्की और तातारी अक़्वाम हैं।

(मिरक़ात जिल्द 5 सफ़हा 156)

इस हदीस में बसरा से मुराद शहरे बग़दाद है चूंकि ज़मानए रिसालत में बग़दाद शहर आबाद नहीं हुआ था और बसरा बग़दाद ही के कुर्बो ज्वार में है इस लिये बग़दाद की जगह हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बसरा का नाम लिया उस जंग का मुख़्तसर तज़्किरा यह है कि "सफ़र 656" में जब चंगेज़ ख़ाँ का पोता हेलाकू खां तातारियों का एक अ़ज़ीम लशकर लेकर बग़दाद पर हमला आवर हुआ तो उस वक़्त बग़दाद से मुसलमानों की तीन 3 जमाअ़तें हो गयीं कुछ मुसलमान तो अपने अपने माल व असबाब को बैलों पर लादकर अपनी जान बचाने के लिये जंगलों और ब्याबानों में पनाह लेने के लिये निकल भागे मगर यह लोग बच न सके बल्कि तातारियों की ख़ूंख़ांर फ़ौजों ने इन सब को चुन चुन कर क़त्ल कर डाला और इनके माल व असबाब को लूट लिया और कुछ

मुसलमान यानी ख़ुद ख़लीफ़ए बग़दाद मुअ़तसिम बिल्लाह और उसके अरकाने सल्तनत और बग़दाद के उमरा व शुरफ़ा व उलमा ने तातारियों से जान की अमान लेकर क़िला का फाटक खोल दिया और बाहर निकल आये मगर क़ौमे तातार के बद अ़हद कुफ़्फ़ार ने बद अ़हदी की और इन सब मुसलमानों को क़त्ल करके टुकड़े टुकड़े कर डाला और ख़लीफ़ए बग़दाद को भी निहायत ही बेरहमी और बेदर्दी के साथ तरह तरह की इज़ा (तक्लीफ़) देकर मार डाला

और कुछ शेर दिल और जां बाज़ मुसलमान इस अ़ज़ीम फ़ितना के सैलाब में भी साबित क़दम रहे न इन लोगों ने फ़रार किया न क़ौमे कुफ़्फ़ार से अमान के तलबगार हुये बल्कि उन कुफ़्फ़ार के मुक़ाबिले में तलवार लेकर डट गये अपने बाल बच्चों को अपने पीछे करके उन काफ़िरों से जंग करने लगे और ख़ुदा की राह में जिहाद करते हुये सब शहादत के शर्फ़ से सरफ़राज़ हो गये और शहरे बग़दाद तबाह व बरबाद हो गया।

(हुज्जतुल्लाहि अ़लल आ़लमीन सफ़हा 820 वग़ैरह)

तब्सिरा:– हुज़ूरे अक़्दस सल्लललाहु अ़लैहि वसललम ने सैकड़ों बरस पहले जो ग़ैब की ख़बर दी थी वह हर्फ़ ब हर्फ़ सादिक़ (सच्ची) हुयी और क़यामत की यह निशानी ज़ाहिर हो चुकी।

वल्लाहु तआ़ला आलम

हिजाज़ की आग

हदीस (18)

हज़रते अबू हुरैरा रज़िअल्लाहु अ़न्हु का बयान है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़यामत क़ायम नहीं होगी यहां तक कि हिजाज़ की ज़मीन से एक आग निकलेगी जो मक़ामे बसरा में ऊंटों की गरदनों को रौशन कर देगी।

(मिश्कात जिल्द 2 सफ़हा 469)

तशरीह:– मक्का मुअ़ज़्ज़मा और मदीना मुनौव्वरा की ज़मीनों को हिजाज़ कहते हैं और बसरा मुल्के शाम का एक शहर है जो शहरे दमिश्क़ से चन्द मन्ज़िल की दूरी पर है।

तब्सिरा:– इस, आग का तज़किरा बुख़ारी व मुस्लिम की हदीसों में भी है क़यामत की यह निशानी ज़ाहिर हो चुकी 654 हिज० में यह आग क़बीलए क़ुरैज़ा के क़रीब से नागहां ख़ुद बख़ूद नमूदार हुयी और उसकी रोशनी में लोगों ने रात के वक़्त बसरा में ऊंटों की गरदनों को देख लिया पचास 50 दिनों तक यह आग रौशन रही फ़िर ख़ुद ब ख़ूद बुझ गयी।

(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा 324) वग़ैरह

नोट:– इस आग का मुफ़स्सल हाल जान्ने के लिये हमारी किताब "रूहानी हिकायात" जिल्द 2 और "सीरतुल मुस्तफ़ा" मुतालिआ़ करें।

रेगिस्ताने अ़रब में बाग़

हदीस (19)

हज़रते अबू हुरैरा रज़िअल्लाहु अ़न्हु नाकि़ल हैं कि रसूलुल्लाह सल्ललाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़यामत नहीं क़ायम होगी यहां तक कि माल की कसरत हो जायेगी और इस हद तक दौलत बहने लगेगी कि एक आदमी अपने माल की ज़कात निकालेगा तो किसी आदमी को ऐसा नहीं पायेगा जो उसकी ज़कात को क़ुबूल करे अ़रब की (रेगिस्तानी) ज़मीन में बाग़ात नहरें हो जायेंगी और एक रिवायत में है कि (मदीना) की आवादी,, एहाब,, तक या "यहाब" तक पहुंच जायेगी। *(मिश्कात जिल्द 2 सफ़हा 469)*

तशरीह:– यह हदीस मुस्लिम में भी है और इस हदीस में एहाब और यहाब यह दोनों मदीना तय्यबह के क़ुर्ब व जवार में दो गांव के नाम हैं।

इस हदीस का हासिल यह है कि क़ुर्बे क़यामत में माल व दौलत की क़सरत व फ़रावानी इस क़दर बड़ जायेगी कि हर आदमी दौलत मन्द हो जायेगा और कोई ज़कात लेने वाला नहीं मिलेगा और अ़रब की रेगिस्तानी और बनजर ज़मीन जो पानी के क़तरों के लिये और

घास और सब्ज़े के लिये तरस्ती है उस ज़मीन में क़िस्म क़िस्म के बाग़ात और हरी भरी चरागाहें और पानी की नहरें जारी हो जायेंगी और मदीना तय्येबह की आबादी इस क़दर बढ़ जायगी कि उस शहर के मकानात "एहाब या" यहाब गांव तक पहुंच जायेंगे।

तब्सिरा:– क़यामत की इन निशानियों का जुहूर शुरू हो चुका है क्योंकि अ़रब बल्कि सारी दुनिया में दौलत की कसरत व फ़रावानी होती जा रही है और अ़रब की बन्जर ज़मीनों में बाग़ लगाये जा रहे हैं और नहरों के पलान बनाये जा रहे हैं और मदीना तय्येबह की आबादी रोज़ बरोज़ बढ़ती चली जा रही है:-

मदीना की वीरानी

हदीस (20)

हज़रते मआ़ज़ बिन जबल रज़िअल्लाहु अ़न्हु रावी हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि बैतुल मुक़द्दस का (बरबादी के बाद) आबाद होना मदीना की वीरानी है और मदीना की वीरानी जंगे अ़ज़ीम का निकलना है और जंगें अ़ज़ीम का निकलना "कुस्तुन्तुनिया" का फ़तह होना है और फ़तहे "कुस्तुन्तुनिया" दज्जाल का निकलना है। *(अबू दाऊद जिल्द 2 सफ़हा 242 प्रकाशित मुजतबायी)*

तशरीह:– हदीस का ख़ुलासा मतलब यह है कि इन तमाम वाक़िआत का ज़ुहूर यके बाद दिगरे आगे पीछे होगा और क़यामत से पहले एक मरतबा मदीना मुनौव्वरा वीरान हो जायेगा।

चुनांन्चे इस बारे में तिब्रानी की एक हदीस है कि मदीना की आबादी बढ़कर "सलअ़" पहाड़ तक पहुंच जायेगी फिर मदीना मुनौव्वरा पर एक ऐसा वक़्त भी आयेगा कि मुसाफ़िरों की जमाअ़त इस शहर के अतराफ़ से गुज़रेगी तो यह कहेगी कि कभी इस जगह कोई आबादी थी क्योंकि अ़रसए दराज़ तक वीरान होते होते इसके निशानात व आसार मिट चुके होंगे।

(हुज्जतुल्लाह जिल्द 2 सफ़हा 843)

तब्सिरा:– अभी तक यह निशानी आ़लमे वुजूद में नहीं आई।

सोने का पहाड़

हदीस (21)

हज़रते अबू हुरैरा रज़िअल्लाहु अ़न्हु से मनकूल है उन्होंने फ़रमाया कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़यामत नहीं क़ायम होगी यहां तक कि नहरे फ़ोरात सोने के पहाड़ ज़ाहिर कर देगी और लोग उसको लेने के लिये एक दुसरे से यहां तक जंग करेंगे कि हर सौ 100 में से निन्नानवें 99 क़त्ल हो जाएंगे और

उनमें का हर शख़्स यह कहता होगा कि शायद में क़त्ल से बच जाऊंगा।

(मिश्कात जिल्द 2 सफ़हा 469)

तशरीह:– यह हदीस मुस्लिम शरीफ़ में भी है और एक दुसरी हदीस में यह भी आया हे कि अ़न्क़रीब नहरे फ़ोरात सोने के ख़ज़ानों को ज़ाहिर कर देगी और जो लोग उस वक़्त वहां मौजूद होंगे वह उसको न ले सकेंगे इसी तरह एक हदीस में यह भी वारिद हुआ हे कि क़ुर्बे क़यामत में ज़मीन अपने जिगर के टुकड़ों को क़य कर देगी जो सोने चांदी के सुतूनों की शक्ल में पड़े होंगे एक क़ातिल जब उनकों देखेगा तो कहेगा कि हाय अफ़सोस इसके लिये मैंने लोगों का ख़ून बहाया था और जब रिश्तेदारी काटने वाला इसके बाद आयेगा तो कहेगा कि अफ़सोस! इसी के लिये मैंने अपने रिश्तेदारों से क़तए तअ़ल्लुक़ कर लिया था और चोर जब यहां गुज़रेगा तो अफ़सोस करता हुआ कहेगा कि हाय! इसी के बारे में मेरा हाथ काटा गया था फिर यह सब उन ख़ज़ानों को छोड़ कर वहां से चल देंगे और कोई भी उसमें से कुछ नहीं लेगा

(मिश्कात जिल्द 2 सफ़हा 469)

नहरे फ़ोरात से सोने का पहाड़ इस तरह नमूदार होगा कि उस नहर का पानी ख़ुद बख़ूद खुश्क (सुख) होजायेगा और ज़मीन फट जायेगी और सोने चांदी वग़ैरह की कानें नज़र आने लगेंगी इसी तरह जा बजा ज़मीन में बड़े बड़े शेगाफ़ हो जायेंगे और ज़मीन में गड़े हुये दफ़ीने और ख़ज़ाने ज़मीन के ऊपर आ जायेंगे।

तब्सिरा:– जहां तक मेरी मालूमात का तअ़ल्लुक़ है अभी तक

इस निशानी का ज़ुहूर नहीं हुआ है

क़ैसर व किसरा के ख़ज़ाने

हदीस (17)

हज़रते अबू हुरैरा रज़िअल्लाहु तआला अन्हु ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब किसरा हिलाक हो जायेगा तो उसके बाद कोईकिसरा नहीं होगा जब क़ैसर हिलाक हो जायेगा तो उसके बाद कोई क़ैसर नहीं होगा और मुझे उस ज़ात की क़सम जिसके दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है कि यक़ीनन उन दोनों के ख़ज़ाने अल्लाह की राह में ख़र्च किये जायेंगे

(तिर्मीज़ी जिल्द 2 सफ़हा 44)

तब्सिरा:– क़यामत की यह निशानियां ज़ाहिर हो चुकीं क्योंकि अमीरूल मुमिनीन हज़रते उमर रज़िअल्लाहु अन्हु के दौरे ख़िलाफ़त में इरान का बादशाह किसरा और रूम का बादशाह क़ैसर दोनों हिलाक हो गये और उन दोनों की सल्तनतें ख़त्म हो गयीं और उन दोनों के ख़ज़ाने ऊंटों पर लादकर मदीना मुनौव्वरा लाये गये और अमीरूल मुमिनीन ने उन ख़ज़ानों को अल्लाह की राह में ख़र्च करदिया और फिर इन दोनों के बाद न कोई किसरा हुआ न क़ैसर।

वल्लाहुतआला आअलम

टिड्डियों की हिलाकत

हदीस (23)

हज़रते जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़िअल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है उन्हों ने कहा कि हज़रते उमर रज़िअल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त के बरसों में जिस साल उनकी वफ़ात हुयी–टिड्डियां ना पैद हो गयीं तो हज़रते उमर रज़िअल्लाहु अन्हु इसकी वजह से ग़मगीन हो गए–और उन्हों ने एक सवार यमन की तरफ़ भेजा, एक सवार ईराक़ की जानिब और एक सवार शाम की तरफ़ भेजा–और टिड्डियों के बारे में लोगों से पूछ ताछ करने लगे फिर यमन की तरफ़ जानेवाला सवार एक मुट्ठी टिड्डियां लेकर आया और उनको आपके सामने बिखेर दिया फ़िर आपने उन टिड्डियों को देखा तो नारए तकबीर बुलन्द किया और फ़रमाया कि में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि अल्लाह तआला ने एक हज़ार जान्दार मख़लूक़ को पैदा फ़रमाया है जिनमें से 600 सौ समुद्र में और चार सौ 400 ख़ुश्की में हैं और सबसे पहले

उन जानदार मख़लूक़ात में से टिड्डियां हिलाक होंगी फिर इनके बाद दुसरी जानदार मख़लूक़ात की हिलाकत लगातार इस तरह होने लगेगी जिस तरह मोतियों की लड़ी का धागा कट जाये तो मोतियां लगातार गिरने लगती हैं।

(मिश्कात जिल्द 2 सफ़हा 472 अशरा तुस्साअः)

तब्सिरा:– अभी तक टिड्डियों का वुजूद दुनिया से ख़त्म नहीं हुआ है इस लिये ज़ाहिर है कि अभी तक क़यामत की इस निशानी का वुजूद नहीं हुआ है हां इतनी बात ज़रूर हो गयी है कि अब टिड्डियों की तादाद बहुत कम हो गयी है हुकूमतें उनके अण्डों और बच्चों को हिलाक करने में बड़ी जद्दो जिहद कर रही हैं जिसका अन्जाम इसके सिवा और क्या होगा कि एक न एक दिन टिड्डियों की नस्ल दुनिया से फ़ना (ख़त्म) हो जायेगी और क़ययामत की एक निशानी मअ़ारिज़े वुजूद (ज़ाहिर हो जाएंगी), में आ जायेगी।

वल्लाहु तआ़ला आलम

हुरूफ़े क़ुरआ़न का मिटना

हदीस (24)

हज़रते हुज़ैफ़ा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने

कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़ुरआन पर एक ऐसी रात गुज़रेगी कि लोग सुबह करेंगे तो हर जगह से क़ुरआन की आयत और हर्फ़ मिटा दिये गये होंगे

(हुज्जतुल्लाह जिल्द 2 सफ़हा 847 बहवाला इब्ने माजा 303)

तशरीह:– इस हदीस का मतलब यह है कि क़यामत से पहले एक ऐसी रात आयेगी कि अचानक क़ुरआने पाक की तमाम आयतें और हुरूफ़-क़ुरआ़न मजीद की जिल्दों से भी और हाफ़िज़ों के सीनों से भी मिट जायेंगे–

चुनांन्चे एक हदीस में यह भी आया है कि क़यामत नहीं आयेगी यहां तक कि क़ुरआन मजीद जहां से आया है वहीं लौटकर चला जायेगा और अ़र्श के गिर्द शहद की मक्खी की तरह आवाज़ करेगा तो अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि तुझे क्या हो गया है? तो क़ुरआन कहेगा कि मैं तेरे पास से निकला था और अब तेरे ही पास लौटकर चला आया हूं क्योंकि लोग मेरी तिलावत तो करते हैं मगर मेरे अहकाम (हुक्म) पर अ़मल नहीं करते।

(हुज्जतुल्लाह जिल्द 2 सफ़हा 847)

तब्सिरा– अभी तक क़यामत की इस निशानी का ज़ुहूर नहीं हुआ है यह बिल्कुल ही क़ुर्बे क़यामत में होगा:-

ख़ूँरेज़ी की कसरत

हदीस (25)

हज़रते अबू हुरैरह रज़िअल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि उन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़यामत नहीं क़ायम होगी यहां तक कि "हरज" बहुत ज़्यादा बढ़ जायेगा तो लोगों ने कहा कि "हरज" क्या चीज़ है? या रसूलुल्लह! तो आप ने फ़रमाया कि क़त्ल क़त्ल। *(मुस्लिम जिल्द 2 सफ़हा 390)*

तब्सिराः– क़त्ल और ख़ूँरेज़ी की कसरत तमाम दुनिया में बहुत ज़्यादा बढ़ गयी है और रोज़ाना इसकी तादाद में इज़ाफ़ा (बढ़ोत्री) ही होता जाता है–

लिहाज़ा क़यामत की यह निशानी ज़ुहूर पज़ीर हो चुकी है:

वल्लाहु तआ़ला आलम

मस्जिदों में दुनिया की बातें

हदीस (26)

हज़रते हसन रज़िअल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि लोगों पर एक ऐसा ज़माना आयेगा कि उनकी

मस्जिदों में उनकी दुनियावी बातें होंगी– लिहाज़ा तुम लोग ऐसे लोगों की सोहबत में न बैठो–क्योंकि अल्लाह तआ़ला को ऐसे लोगों की कोई परवाह नहीं है

(हुज्जतुल्लाह जिल्द 2 सफ़हा 832)

तब्सिराः– क़यामत की यह निशानी पुरी हो चुकी है क्योंकि तमाम दुनिया के मुसलमान इस बला में गिरिफ़तार हैं कि चन्द मिन्टों के लिये मस्जिदों में नमाज़ के लिये आते हैं–तो ख़्वाह मख़्वाह (बिलावजह) दुनिया की बातें और धंधे रोज़गार की बातों का तज़किरा करने लगते हैं।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने अपनी उम्मत को यह हुक्म फ़रमाया है कि ऐसे लोगों के पास न बैठो बल्कि उन लोगों से दूर रहो।

30 मुद्दइयाने नुबूवत

(नुबूवत का दावा करने वाले)

हदीस (27)

हज़रते सौबान रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मरवी हे उन्होने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़यामत नहीं क़ायम होगी यहां तक कि अनक़रीब मेरी उम्मत में तीस 30 झूठे होंगे जिनमें का हर एक यह गुमान करेगा कि वह अल्लाह का नबी है हालांकि मैं ख़ातिमुन्नबीय्यीन हूं मेरे बाद कोई नबी नहीं होगा और हमेशा मेरी उम्मत में से एक जमाअ़त हक़ पर रहेगी जो ग़ालिब रहेगी उनके मुख़ालिफ़ीन उनको कोई नुक़्सान नहीं पहुंचा सकेंगे यहां तक कि अल्लाह का हुक्म (क़यामत) आजाये--इस हदीस को अबू दाऊद और तिर्मीज़ी ने रिवायत किया है।

(मिशकात जिल्द 2 सफ़हा 465)

तब्सिरा:- इस रिवायत से मालूम होता है कि क़यामत से पहले तीस 30 आदमी नुबूवत का दावा करेंगे. लेकिन इमाम अहमद की एक रिवायत में है कि 27 आदमी नुबूवत का दावा करेंगे और तबरानी की रिवायत में यह है कि सत्तर 70 कज़्ज़ाब होंगे।

(हुज्जतुल्लाह 824)

इन रिवायतों में तत्बीक़ की एक सूरत तो यह है कि सत्तर 70 की तादाद में 27 और 30 दोनों दाख़िल हैं इस लिये किसी रिवायत में 27 का ज़िक्र आ गया और किसी में 30 का और किसी रिवायत

में पूरे 70 की तादाद मज़कूर हो गयी।

दूसरी सूरत तत्बीक़ की यह भी हो सकती है कि कुल कज़्ज़ाबों की तादाद तो 70 होगी जिनमें से 27 या 30 तो नुबूवत का दावा करेंगे बाक़ी इमामत या मेहदी वग़ैरह होने का दावा करेंगे और तत्बीक़ की एक तीसरी सूरत यह भी है कि इन गीन्तीयों की तादाद तहदीद के लिये न माना जाये बल्कि इन गिन्तियों को तकसीर और बयाने कसरत (जियादह बयान करने) के लिये माना जाये यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की इन गिन्तियों से यह मुराद है कि बहुत से लोग नुबूवत का दावा करेंगे जैसे उर्दू के मुहावेरह में बोला जाता है "मैंने पचास मरतबा तुम को समझाया" तो इसका यह मतलब नहीं होता कि मैंने गिनकर पूरे 50 मरतबा समझाया बल्कि इसका मतलब यह होता है कि मैं बहुत ज़्यादा मरतबा तुमको समझाया तो इसी तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का यह फ़रमाना कि 27 आदमी या 30 आदमी या 70 आदमी नुबूवत का दावा करेंगे इसका यह मतलब हे कि नुबूवत का दावा करने वाले कज़्ज़ाब बहुत ज़्यादा होंगे।

चुनांन्चे ज़मानए अक़दस के वक़्त से आज तक नुबूवत का दावा करने वाले कज़्ज़ाबों का शुमार किया जाए तो उन बद नीसबों और बेदीनों की तादाद 30 से कहीं ज़्यादा हो चुकी है

बहरहाल क़यामत की इस निशानी का ज़ुहूर हो चुका है।

वल्लाहु तआ़ला आअ़लम

काअ़बा को ढाने वाला

हदीस (28)

हज़रते अबू हुरैरा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहिवसल्लम ने फ़रमाया कि दो पतली पतली पिन्डलियों वाला हब्शाह का एक आदमी काअ़बा को बरबाद करेगा

(मुस्लिम जिल्द 2 सफ़हा 394)

तबसिरा:– अ़लामते क़यामत की इस पेशनगोयी का मिस्दाक़ अब तक ज़ुहूर में नहीं आया और इस बारे में इख़्तिलाफ़ है कि यह इन्तिहायी हौल्नाक वाक़िआ़ कब और किस ज़माना में वक़ुअ़ पज़ीर (ज़ाहिर) होगा, हज़रते काअ़ब बिन अहबार रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का क़ौल है कि हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम के ज़माने में यह सानेहा (दर्दनाकवाक़ेआ़) दरपेश होगा और जब हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम के पास लोग फ़रियाद लेकर आयेंगे तो आप आठ ८ या नौ 9 आदमियों की एक जमाअ़त को तफ़तीश के लिये मक्का शरीफ़ रवाना फ़रमायेगें और काअ़बा के बरबाद होने से पहले याजूज व माजूज की हिलाकत के बाद हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम और दुसरे लोग हज व उमरा अदा कर चुके होंगे।

वल्लाहु तआ़ला आअ़लम

(हुज्जतुल्लाहि अ़ललआ़लमीन जिल्द 2 सफ़हा 843)

आदमी क़ब्र के ऊपर लोटेगा

हदीस (29)

हज़रते अबू हुरैरह रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़सम है उस ज़ात की जिस के दसते क़ुदरत में मेरी जान है कि दुनिया ख़तम नहीं होगी यहां तक कि आदमी क़ब्र पर यह कहते हुये लोटता होगा कि काश मैं इस क़ब्र वाले की जगह होता और उसके पास मुसीबत के सिवा दीन नहीं होगा।

(मिशकात अशरातुस्साअ़: जिल्द 2 सफ़हा 469)

तशरीह:– यह हदीस मुस्लिम में भी है और इस हदीस का मतलब यह है कि जब क़यामत क़रीब हो जायेगी तो क़िस्म क़िस्म के फ़ितनों की वजह से ऐसे ऐसे मसाइब (मुसीबतें) और तकालीफ़के तूफ़ान मोमिन पर आयेंगे कि दीन पर क़ायम रहना उतना ही मुशकिल हो जायेगा जितना कि आग का अंगारा हाथ में उठाये रहना– इस क़िस्म की बलाओं में बहुत से मोमिनीन का दीन बरबाद हो जायेगा और आदमी रंज व क़ल्क़ (तकलीफ़) से बिल्बिला कर क़ब्रिस्तान जायेगा और किसी क़ब्र पर सर पटक पटक कर लोटेगा

और यह कहेगा कि काश मैं इस बुरे वक़्त से पहले ही मर गया होता और इस क़ब्र वाले के बजाये में इस क़ब्र में दफ़न हो गया होता तो मैं इन मुसीबतों और बलाओं से बच गया होता और मेरा दीन व ईमान भी सलामत रह गया होता।

तब्सिराः- अभी यह वक़्त तो नहीं आया है कि आदमी मौत को अपनी ज़िन्दगी पर तरजीह देकर क़ब्रों पर लोटता फिरे मगर यह मन्ज़िल तो आ गयी है कि दीनदार मुसलमान ज़मानए हाल के इल्हाद व बेदीनी और दीन व मज़हब की तहक़ीर व तज़लील और अ़वाम के इस्लाम दुशमन मुआ़शिरह से बेज़ार होकर क़ब्र वालों पर रश्क करने लगा है और बाज़ दीनदार मुसलमानों को यह कहते सुना गया है कि जो लोग इमान के साथ इस दुनिया से चले गये वह हम से अच्छे रहे क्योंकि वह लोग इस दौर के मुल्हिदानह रविश और दीन व मज़हब की तौहीन व तज़लील के जान्सोज़ मनाज़िर देखने से बच गये गोया यह कहा जा सकता है कि क़यामत की इस निशानी के ज़ुहूर का वक़्त क़रीब आ पहुंचा है और इसके आसार नज़र आने लगे हैं और अगर दीन व मज़हब से आम बेज़ारी और मुस्लिम मुआ़शिरे की इमान सोज़ ख़राबियों का यही हाल रहा तो रफ़्ता रफ़्ता चन्द बरसों में क़यामत की यह निशानी भी इस तरह नज़र आने लगेगी जिस तरह खुले आसमान में रात के वक़्त चांद तारे नज़र आया करते हैं।

वल्लाहु तआ़ला आअ़लम

लठबाज़ बादशाह

हदीस (30)

हज़रते अबू हुरैरह रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मरवी है उन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़यामत क़ायम नहीं होगी यहां तक कि "क़ह्तान" से एक आदमी ऐसा निकलेगा जो तमाम इन्सानों को अपनी लाठी से हांकेगा।

मिशकात बाबुल्मलाहिम जिल्द 2 सफ़हा 466

तशरीहः- "क़ह्तान" या तो यमनी अक़्वाम के मुरिसे आला का नाम है या यमनी क़बाइल में से एक क़बीले का नाम है बहर हाल इस हदीस का यह मतलब है कि ख़ानदाने क़ह्तान का एक बादशाह होगा जो अपनी लाठी के ज़ोर से लोगों पर इस तरह हुकूमत करेगा जिस तरह कोई आदमी अपनी लाठी से जानवरों को हांक कर जहां, और जिधर चाहता है ले जाया करता है और कोई जानवर सरताबी नहीं कर सकता इसी तरह यह ज़ालिम बादशाह अमीर व ग़रीब और शरीफ़ व रज़ील सबको अपनी एक ही लाठी से हांकेगा और उसकी लाठी के डर से कोई शख़्स चूं व चेरा करने की मजाल न रखेगा जब तक यह बादशाह न होगा क़यामत नहीं आयेगी।

बाज़ मुहद्देसीन ने फ़रमाया कि यह बादशाह किसी अ़रब का आज़ाद करदह ग़ुलाम होगा और उसका नाम *"झजाह"* होगा।

(मिरक़ात जिल्द 5 सफ़हा 157)

तब्सिरा:– तारीखे़ अ़रब के मुतालेआ़ से पता चलता है कि बहुत से इस क़िस्म के ज़ालिम बादशाह अ़रब में पैदा हो चुके हैं लेकिन "झजाह" नाम वाला जहां तक मुझ कम इल्म की मालूमात का तअ़ल्लूक़ है अ़रब में अब तक कोई बादशाह नहीं हुआ है इस लिये मेरे इल्म में क़यामत की यह निशानी अभी आ़लमे वुजूद में नहीं आयी है।

वल्लाहु तआ़ला आअ़लम

फ़त्हे बैतुल मुक़द्दस

हदीस (31)

हज़रते औ़फ़ बिन मालिक कहते हैं कि मैं नबिये करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के पास जंगे तबुक में आया उस वक़्त आप एक चमड़े के ख़ैमा में थे तो आप ने फ़रमाया कि क़यामत से पहले तुम 6 (निशानियों) को गिन लो- (1) मेरी वफ़ात (2) फिर बैतुल मुक़द्दस की फ़तह (3) फिर एक वबा (ताऊन) तुमको पकड़ेगी जो बकरियों की गिल्टी की बीमारी की तरह होगी (4) फिर माल की इस क़दर ज़्यादती होगी कि किसी आदमी को एक सौ 100 दीनार दिये जायेगे फिर भी वह (उसको कम समझकर) नाराज़ ही रहेगा (5) फिर एकऐसा फ़ितना होगा जो अ़रब

के हर घर में दाख़िल हो जायेगा (6) फिर तुम्हारे और रूमियों के दरमियान एक सुलह होगी मगर रूमी कुफ़्फ़ार बद अ़हदी करेंगे और इतना बड़ा लशकर लेकर तुम पर हमला आवर होंगे कि उस लशरक में अस्सी 80 झण्डे होंगे और हर झण्डे के नीचे बारह बारह हज़ार फ़ौजें होंगी।

(मिशकात जिल्द 2 सफ़हा 466)

तब्सिरा:– क़यामत की यह निशानियां तक़रीबन सभी ज़ाहिर हो चुकी हैं।

पहली निशानी :– यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इस आ़लमे दुनिया से आ़लमे आख़िरत का सफ़र फ़रमाना यह 11 हिजरी में हो चुका।

दुसरी निशानी :– बैतुल मुक़द्दस का फ़तह होना यह अमीरूल मोमिनीन हज़रते उमर फ़ारूके़ आज़म रज़िअल्लाहु अ़न्हु के दौरे ख़िलाफ़त में वाक़िअ़ हुआ।

तीसरी निशानी :– ताऊन की वबा यह अ़लामत भी हज़रते अमीरूल मोमिनीन उमर फ़ारूके़ आज़म रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ख़िलाफ़त के अय्याम में ज़ुहूर पज़ीर हुयी ज़मानए इस्लाम में यह सब से पहला ताऊन है इस वबा में तीन दिन के अनदर 70 हज़ार आदमी मर गये चूंकि उस वक़्त इस्लामी लशकरों का पड़ाव बैतुल मुक़द्दस के करीब एक गांव "अ़मवास" में था इस लिये तारीख़ों में इस वबा का नाम ताऊने अ़मवास पड़ गया।

ताऊन एक वबाई बीमारी है जिसको अंग्रेज़ी में "पिलेग" कहते हैं, इस बीमारी में शदीद बुख़ार आता है और गर्दन या बग़लों, यारानों की जड़ों में कबूतर के अण्डे के बराबर गिलटियां निकलती हैं जिस में नाक़ाबिले बरदाश्त दर्द के साथ सख़्त जलन होती है इस मर्ज़ में बहुत जल्द आदमी मर जाता है और बहुत कम लोग इस बीमारी से शिफ़ायाब होते हैं पहले हिन्दुस्तान में तक़रीबन हर साल यह वबा आती थी मगर चालीस 40 बरस से यह वबा नहीं आयी है।

चौथी निशानी :- यानी माल व दौलत की कसरत व फ़रावानी इस निशानी का ज़ुहूर तारीखे़ इस्लाम में सब से पहले हज़रते अमीरूल्मुमिनीन उसमाने ग़नी रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की खिलाफ़त में हुआ और उसके बाद बराबर मालदारी की कसरत में ज़्यादती होती गयी और होती जा रही है यहां तक कि अ़ल्लामा मुल्ला अ़ली क़ारी रहमतुल्लाह अ़लैह का बयान है कि हमारे ज़माने में तो इस क़दर माल व दौलत की कसरत हो गयी है कि एक हज़ार दीनार को भी लोग क़लील व हक़ीर ही रक़म शुमार करते हैं और उसकी कोई क़दर नहीं करते।

(मिरक़ात जिल्द 5 सफ़हा 158)

पांचवीं निशानी :- अ़रब का फ़ितना इस से मुराद हज़रते अमीरूल मोमिनीन उसमाने ग़नी रज़िअल्लाहु अ़न्हु की शहादत और उसके बाद की लड़ाईयां है जिनके असरात से अ़रब का हर हर घर मुतअस्सिर हुआ और इस ख़ाना जंगी में मुसलमानों का बेशुमार जानी व माली नुक़सान हुआ और चन्द दिनों के लिये इस्लामी फ़ुतूहात का दरवाज़ा बन्द हो गया।

(मिरक़ात जिल्द 5 सफ़हा 158)

छटी निशानी :- रूमियों से सुलह और फिर उन लोगों की बद अ़हदी इस निशानी का ज़ुहूर खिलाफ़ते राशिदा के बाद ख़ुसूसन खिलाफ़ते अ़ब्बासिया के दौर में बार बार हुआ, और बारहा रूमियों ने बड़े बड़े अज़ीम लशकरों के साथ मुस्लिम हुकूमतों पर यलग़ार की और आइन्दा भी इस क़िस्म के हमले मुसलमानों पर होते ही रहेंगे यहां तक कि हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम का नुज़ूल और हज़रते इमाम मेहदी के ज़ुहूर के बाद कुफ़्फ़ार हमेशा के लिये मग़लूब हो जायेंगे और हर तरफ़ इस्लाम का बोल बाला रहेगा।

वल्लाहु तआ़ला आअ़लम

अ़रब में दोबाराह बुत परस्ती

हदीस (32)

हज़रते अबू हुरैरह रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़यामत नहीं क़ायम होगी यहां तक कि क़बीलए "दौस" की औ़रतों के सुरीन (तवाफ़ करते हुये) ज़ुल ख़लूसहः पर हिलैंगे और ज़ुल ख़लूसहः क़बीलए दौस का एक बुत था जिसको वह लोग ज़मानए जाहिलियत में पूजते थे।

(बुख़ारी जिल्द 2 सफ़हा 1054)

तब्सिराः– इस हदीस का हासिल यह है कि क़ुर्बे क़यामत में अ़रब के एक क़बीला "दौस" के लोग बुतों का तवाफ़ और उनकी परस्तिश (पूजा) करने लगेंगे।

अभी तक यह निशानी ज़ाहिर नहीं हुयी है और अ़रब में कहीं भी अब तक बुत परस्ती नहीं हो रही है।

चार 4 फ़ुतूहात

हदीस (33)

हज़रते नाफ़े बिन उतबा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम मुसलमान जज़ीरतुल अ़रब से जंग करोगे तो अल्लाह तआ़ला तुम को फ़तह अ़ता फ़रमायेगा फिर तुम लोग फ़ारस से जंग करोगे तो अल्लाह तआ़ला उसको भी मफ़तूह फ़रमादेगा फिर तुम लोग रूम से लड़ोगे तो अल्लाह तआ़ला तुम्हे फ़तहयाब बनादेगा फिर दज्जाल से तुम लोगों की जंग होगी तो अल्लाह तआ़ला उसके मुक़ाबिले में भी तुमको फ़तह देगा।

(मिशकात जिल्द 2 सफ़हा 466)

तब्सिरा– क़यामत से पहले होने वाली मज़कूरह बाला चारों लड़ाइयों में से सिर्फ़ आख़िरी जंग अभी नहीं हुई बाक़ी तीनों लड़ाइयां

अमीरूल मुमिनीन हज़रते उमर रज़िअल्लाहु अ़न्हु के दौरे ख़िलाफ़त में हो चुकीं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का फ़रमाने बशारत ज़ाहिर हो चुका कि उन लड़ाइयों में मुसलमानों को फ़तहे मुबीन हासिल हुई।

जूते का फ़ीता बोलेगा

हदीस (34)

हज़रते अबू सईद खुदरी रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मुझे उस ज़ात की क़सम है जिसके क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है कि क़यामत नहीं क़ायम होगी यहां तक कि दरिन्दे जानवर इन्सानों से गुफ़्तगू करेंगे और आदमी से उसका कोड़ा बातें करेगा और उसके जूते का तस्मा कलाम (बातें) करेगा और आदमी को उसकी रान उन मुआ़मिलात की ख़बर देगी जिनको उसकी बीवी ने उस के पीछे किया होगा।

(मिशकात जिल्द 2 सफ़हा 471)

तब्सिरा– क़ुर्बे क़यामत की यह हौलनाक निशानियां अभी तक ज़ाहिर नहीं हुयी हैं लेकिन हर मोमिन को इस पर ईमान और यक़ीन रखना ज़रूरी है कि फ़रमाने रिसालत के बमूजिब (मुताबिक़) यह

निशानियां अन्क़रीब ज़ाहिर होकर रहेंगी जैसा कि दुसरी निशानियां जिनको कोई पहले सोच भी नहीं सकता था वह अ़लल एलान कुछ ज़ुहूर में आ चुकीं कुछ ज़ाहिर हो रही हैं।

बसरा के बन्दर होने वाले

हदीस (35)

हज़रते अनस रज़ीअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ए अनस! लोग बहुत से शहरों को बसायेंगे और उन शहरों में से एक शहर को "बसरा" कहा जायेगा। अगर तू उस शहर के पास से गुज़रे या उसमें दाख़िल हो तो उस शहर की नमकीन ज़मीन और नदी के साहिल, और खजूरों के बाग़ात, और बाज़ारों से, और उस शहर के उमरा (मालदार) के दरवाज़ों से अपने आप को बचाये रखना और बसरा की उन ज़मीनों को लाज़िम पकड़ना जो "ज़वाहीं" कहलाती हैं। क्योंकि बसरा में ज़मीन का धंस जाना, और पथराव और ज़लज़ला होगा और एक क़ौम रात को सोयेगी और सुबह को उठेगी तो बन्दर और सूअर हो जायेगी।

(मिशकात जिल्द 2 सफ़हा 468)

तशरीह:- बसरा इराक़ का बहुत ही मशहूर और तारीख़ी शहर है। "ज़वाही" वह रेतीली ज़मीन है जो सूरज की रोशनी में चमकती और दूर से साफ़ नज़र आती है।

इस हदीस से मालूम हुआ कि इस उम्मत में भी कुछ लोगों की सूरतें मस्ख़ होंगी और यह जो मशहूर है कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम की उम्मत के लोग मस्ख नहीं किये जायेंगे। इस से मुराद यह है कि इस उम्मत में मस्ख़े आ़म नहीं होगा -कि बनी इस्राइल की तरह पूरी पूरी बस्तियां मस्ख़ कर दी जायें। मगर मस्ख़े खास यानी ख़ास ख़ास चन्द अफ़राद का मस्ख़ तो इस उम्मत में भी होगा-जैसा कि इस हदीस से मालूम होता है।

चुनांन्चे बाज़ हदीसों में आया है कि "फ़िरक़ए क़दरिया" में से कुछ लोग मस्ख़ किये जायेंगे मुम्किन है कि बसरा में कुछ लोग फ़िरक़ए कदरिया के आबाद हो गये हों जिनको क़हरे ख़ुदावन्दी मस्ख़ करके बन्दर और सूअर बना देगी

(अशअ़तुल्लमआ़त जिल्द 4 सफ़हा 308)

मसख़ के तीन वक़िआत

मिस्र के फ़ातिमी दौरे हुकूमत में हर साल आ़शूरह (दस्वीं मुहर्रम) के दिन राफ़िज़ियों का एक गिरोह मदीना मुनौवरह के क़ब्रिस्तान जन्नतुल बक़ी में हज़रते अ़ब्बास रज़िअल्लाहु अ़न्हु के कुब्बए मुबारका (गुम्बद) के अन्दर जमा हो कर हज़रते अबू बकरे सिद्दीक़ व हज़रते उमर फ़ारूक़े आज़म रज़िअल्लाहु अ़न्हुमा को

गालियां दिया करता था नां गहां (अचानक) एक साइल (सवाल करने वाला) उस क़ुब्बा में दाख़िल हुआ और यह कहा कि कौन है जो हज़रते अबू बकरे सिद्दीक़ रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की मुहब्बत में मुझे खाना खिलादे? एक बूढ़े ख़बीस राफ़ेज़ी ने उस साइल को अपने घर ले जाकर साइल की ज़बान काट डाली और उसके हाथ पर रखकर कहा कि ले यह है अबू बक्र की मुहब्बत का बदला। साइल अपनी ज़बान को हाथ में लिये हुये मस्जिदे नबवी के दरवाज़े पर बैठकर रोने लगा- और रोते रोते सो गया- ख़ुवाब में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम और हज़रते शैख़ैन (सिद्दीक़े अकबर व फ़ारूक़े आज़म) रज़िअल्लाहु अ़नहुमा की ज़्यारत से मुशर्रफ़ हुआ फिर यह देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़िअल्लाहु अ़न्हु को हुक्म दिया कि उस शख़्स की ज़ुबान उस के मुंह में रख दो चुनांचें उन्हों ने रखदी-इसके बाद साइल बेदार हुआ तो उस की ज़ुबान उसके मुंह में बदस्तूर साबिक़ थी (पहले की तरह) और कोई तकलीफ़ भी नहीं थी फिर साइल ने साल भरके बाद आ़शूरा के दिन उसी क़ुब्बा (गुम्बद) में जाकर खाने का सवाल किया तो एक नौजवान उसको अपने घर ले गया और साइल को खिला पिला कर उसका बहुत एज़ाज़ (इज़्ज़त) किया। साइल ने तअ़ज्जुब के साथ पुछा कि गुज़श्तह साल जब मैंने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़िअल्लाहु अ़न्हु का नाम लेकर खाने का सवाल किया था तो मेरी ज़ुबान काटी गई थी और इमसाल मेरा इस क़दर एज़ाज़ (इज़्ज़त) किया जा रहा हे। आख़िर इसका सबब क्या है? जवान ने कहा कि ऐ शख़्स जिसने तेरी ज़ुबान काटी थी वह मेरा बाप था तेरी ज़ुबान काटते ही अल्लाह ने उसको मस्ख़ करके बन्दर बना

दिया। चुनांचे दरवाज़े का परदा हटाकर उस जवान ने साइल को दिखा दिया कि देख यही मेरा बाप है जिसने तेरी ज़ुबान काटी थी। साइल ने देखा कि घर में एक बन्दर बंधा हुआ बैठा है। उसके बाद जवान ने साइल से कहा कि तुमने जो देखा इसको लोगो से छुपाना और यह कहा कि इसका अंजाम देखकर हम लोगों ने राफ़ेज़ी मज़हब से तौबा करली है। इस वाक़िआ़ को अ़ल्लामा समहोरी ने अपनी किताब "ज़वाजिर" में और अ़ल्लामा इब्ने हजर ने अपनी किताब "अस्सवाइक़ुल्मुह्रिका" में ज़िक्र किया है और इन दोनों के अ़लावा अ़ल्लामा क़स्तलानी वग़ैरह ने भी इस वाक़िआ़ को तहरीर किया है। *(हुज्जतुल्लाहि अ़लल-आ़लमीन जिल्द 2 सफ़हा 827)*

(2) इसी तरह "ज़वाजिर" में लिखा है कि हल्ब में एक आदमी हज़रते अबू बकर सिद्दीक़ और हज़रते ऊमर फ़ारूक़े आज़म रज़िअल्लाहु अ़न्हुमा को गालियां दिया करता था जब यह मर गया तो शहर के चन्द नौजवानों ने उस की क़ब्र खोद कर देखा तो क़ब्र में एक सुअर पड़ा हुआ था, नौजवानों ने उसको घसीट कर क़ब्र से निकाला और उसको आग में जला डाला।

(हुज्जतुल्लाहि अ़ललआ़लमीन जिल्द 2 सफ़हा 827.)

(3) हलब में एक मुसलमान नमाज़ पढ़ रहा था। एक आदमी उससे खिलवाड़ करने लगा। मगर उस मुसलमान ने नमाज़ नहीं तोड़ी और निहायत ख़ुज़ू व ख़ुशूअ़ (दिल लगाकर) के साथ नमाज़ पूरी करली और जैसे ही उस ने सलाम फेरा फ़ौरन ही खिलवाड़ करने वाले का चेहरा ख़िनज़ीर (सूअर) की शक्ल का हो गया और वह जंगल की तरफ़ भागता हुआ चला गया।

(हुज्जतुल्लाहि अ़ललआ़लमीन जिल्द 2 सफ़हा 827)

तब्सिरा:- क़यामत की इस निशानी का बसरा में अभी तक ज़ुहूर नहीं हुआ है। "वल्लाहु तआला आअ़लम"

पत्थरों की बारिश

हदीस (36)

हज़रते आईशा रज़िअल्लाहु अन्हा कहती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इस उम्मत के पिछले लोगों में ज़मीन का धंस जाना और मस्ख़ हो जाना और पत्थराव होगा। हज़रते आइशा रजिअल्लाहु अन्हा कहती हैं कि मैंने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह! क्या हम लोग हिलाक करदिये जायेंगे हालां कि हम लोगों में बहुत से सालिहीन (निक लोग) भी होंगे? तो आपने फ़रमाया! कि हां जब एलानिया (खुलेआम) बदकारी होने लगेगी

(तिर्मीज़ी जिल्द 2 सफ़हा 41)

तशरीह:- मस्ख़ की तरह इस उम्मत में गुनाहों और बद आमालियों की नहूसतों से ख़स्फ़ (ज़मीन में धंसना) और क़ज़्फ़ (पत्थर बरसना भी होगा)

चन्द ख़स्फ़:- (ज़मीन में धंसना) (1) 301 हिज० में मग़रिबे अक़्सा के तेरह 13 गांव ज़मीन में धंस गये।

(2) 346 हिज० में मोतीअ़ के दौरे ख़िलाफ़त में इतना बाड़ा ज़लज़ला आया कि शहर तालिक़ान ज़मीन में धंस गया- और हज़ारों शहरियों की तादाद में से कुल ब मुश्किल 30 आदमी ज़िन्दा

बच सके और इस ज़लज़ला में ईरान की एक सौ पचास 150 बस्तियां ज़मीन में धंस गईं और इसका असर हल्वान तक पहुंचा कि आधे शहर से ज़्यादा हिस्सा ज़मीन के नीचे चला गया। और ज़मीन इस तरह फट गयी कि क़ब्रों से मुर्दे बाहर निकल गये और पानी के चशमे फूट निकले और ईरान में एक पहाड़ फट कर टुकड़े टुकड़े हो गया और एक गांव आधे दिन ज़मीन व आसमान के दरमियान मुअ़ल्लक़ रहा। फिर पूरे शहर वालों समेत ज़मीन में धंस कर ग़ायब हो गया। जैसा कि अ़ल्लामा जलालूद्दीन सुयूती ने अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी से नक़ल किया है।

(3) इसी तरह 597 हिज० में बसरा का एक गांव ज़मीन के अन्दर ग़ायब हो गया।

(4) इसी तरह 533 हिज० में "बोहैरा" शहर ज़मीन के अन्दर चला गया और शहर की जगह सियाह (काला) पानी का तालब बन गया।

(5) इसी तरह आज़र बाईजान के अतराफ़ में 6 गांव ज़मीन के अन्दर धंस गये। अ़ल्लामा बरज़न्जी का बयान है कि यह वाक़िआ हमारे ज़माने में हुआ।

(हुज्जतुल्लाह जिल्द 2 सफ़हा 825+26)

चन्द क़ज़्फ़:- (पत्थर बरसना) अ़ल्लामा जलालूद्दीन सुयूती ने तारीख़ूल ख़ुल्फ़ा में लिखा है कि 285 हिज० में बसरा के क़रीब एक गांव में काले और सफ़ेद रंग के पत्थरों की बारिश हुयी।

(2) 242 हिज० में सुवैदा गांव में इतने बड़े बड़े पत्थर बरसे कि लोगों ने एक पत्थर का वज़न किया तो वह 10 रत्ल (पांच

सेर) वज़न का था।

(3) अल्लामा वरज़न्जी का बयान है कि तख़मीनन (अन्दाज़न) 1060 हिज० में कुरदिस्तान के अन्दर "हीज़ान" और "कुफ़रान" दोनों शहरों के दरमियान अण्डे के बराबर काले पत्थरों की वारिश हुयी और इस पत्थराव की आवाज़ एक दिन की मसाफ़त की दूरी पर रहने वालों ने सुनी।

(हुज्जतुल्लाह जिल्द 2 सफ़हा 828)

पुरा लशकर ज़मीन के अन्दर

हदीस (37)

हज़रते अ़ब्दुल्लाह विन सफ़वान रज़िअल्लाहु अ़न्हु का बयान है कि मुझे हज़रते हफ़्सा रज़िअल्लाहु अ़न्हा ने ख़बर दी कि उन्हों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुये सुना है कि एक लशकर जंग के लिये बैतुल्लाह (काअ़बा मुअ़ज़्ज़मह) का क़स्द करेगा यहां तक कि यह लशकर मक़ामे "बैदा" की ज़मीन में पहुंचेगा तो इस लशकर का दरमियानी हिस्सा ज़मीन में धंसा दिया जायेगा। फिर अगला हिस्सा पिछले हिस्सा को पुकारेगा तो उन सब को ज़मीन में धंसा दिया जायेगा और सेवाये एक शख़्स के जो लशकर से अलग चलता होगा कोई भी बाक़ी नहीं रहेगा और यही शख़्स उन लोगों के बारे में ख़बर देगा यह सुनकर एक शख़्स ने कहा कि मैं शहादत देता हूं कि तूने हज़रते हफ़्सा पर झूठ नहीं बोला है। और मैं शहादत देता हूं कि हज़रते हफ़्सा रज़िअल्लाहु

अ़न्हा-नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर झूठ नहीं बोली हैं

(मुस्लिम जिल्द 2 सफ़हा 388)

तब्सिरा:- क़यामत की यह निशानी अभी तक वुजूद में नहीं आयी है। वल्लाहु तआ़ला आअ़लम

मस्जिदुल् अ़श्शार के शुहदा

हदीस (38)

हज़रते सालेह बिन दिरहम रज़िअल्लाहु अ़न्हु कहते हैं कि हम लोग हज के लिये जा रहे थे तो अचानक एक आदमी (हज़रते अबू होरैरह रज़िअल्लाहु अ़न्हु) खड़े थे। उन्हों ने हम से फ़रमाया था कि तुम्हारे पहलू में एक गांव है जिस को "ओबुल्ला" कहते हैं। हम लोगों ने कहा-जी हां। तो उन्हों ने फ़रमाया कि तुम में से कौन इस बात की ज़िम्मेदारी लेता है कि वह "मस्जिदुल अ़श्शार" में दो रिकअ़त या चार रिकअ़त नमाज़ पढ़े-और यह कह दे कि इसका सवाब अबू हुरैराह के लिये है। मैं ने अपने महबूब सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से सुना है कि यक़ीनन अल्लाह तआ़ला क़यामत के दिन "मस्जिदुल अ़श्शार" से ऐसे शहीदों को उठायेगा कि उनके सिवा कोई भी (क़यामत के दिन) शुहदाए बदर की सफ़ में नहीं खड़ा होगा। *(मिशकात जिल्द 2 सफ़हा 468)*

तब्सिरा:- इस हदीस से चन्द मसाइल साबित होते हैं (1) मुक़द्दस मक़ामात में इबादत करने का सवाब बहुत ज़्यादा फ़ज़ीलत रखता है।

(2) इबादाते मालियह की तरह नमाज़ व रोज़ा वग़ैरह बदनी इबादतों का सवाब भी बज़रिआ फ़ातिहा ज़िन्दों और मुर्दों को पहुंचाना सहाबए किराम का तरीक़ा है।

(3) किसी शख़्स से अपने लिये फ़ातिहा और इसाले सवाब की फ़रमाइश जाइज़ व दुरूस्त है।

मस्जिदुल अ़शशार के यह शुहदाए केराम क़यामत से पहले कब शहादत से सरफ़ाज़ होंगे? या शहीद हो चुके-कुछ मालूम नहीं हो सका। वल्लाहु तआ़ला आअ़लम

यहूदियों का क़त्ले आ़म

हदीस (31)

हज़रते अबू हुरैरह रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उस वक़्त तक क़यामत क़ायम नहीं होगी यहां तक कि मुसलमान यहूदियों से जंग करेंगे। और उन यहूदियों को मुसलमान क़त्ल करेंगे। यहां तक कि कोई यहूदी किसी पत्थर या दरख़्त की आड़ में छुपेगा तो वह पत्थर और दरख़्त पुकारेगा कि ए मुसलमान! ए अल्लाह के बन्दे! यह मेरे पीछे एक यहूदी है-तू आजा और इसको क़त्ल कर डाल सेवायें एक "ग़रक़द" के दरख़्त के क्योंकि वह यहूदियों का दरख़्त है।

(मिशकात जिल्द 2 सफ़हा 466)

तशरीह:- इस हदीस का ख़ुलासा यह है कि इस क़त्ले आ़म

में यहूदियों को कहीं भी पनाह नहीं मिलेगी हां सिर्फ़ एक दरख़्त जिसका नाम "ग़रक़द" है उसकी आड़ में यहूदियों को पनाह मिल सकेगी। हज़रते शैख़ अ़ब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी अ़लैहिर्रहमह ने फ़रमाया कि "ग़रक़द" एक ख़ारदार जंगली दरख़्त है और उस दरख़्त को यहूदियों से क्या मुनासिबत और कौन सा ख़ास तअ़ल्लुक़ है? इसकी हक़ीक़त को अल्लाह तआ़ला अैर उसके रसूल अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के सिवा कोई नहीं जानता।

(अशअ़तुल्लमआ़त जिल्द 4 सफ़हा 157)

तब्सिरा:- क़यामत की यह निशानी अभी तक ज़ाहिर नहीं हुई है। बल्कि बाज़ रिवायतों से यह पता चलता है कि दज्जाल के निकलने के बाद जो यहूदी दज्जाल की फ़ौजों में शामिल होकर मुसलमानों से जंग करेंगे उन यहूदियों का यह हाल होगा कि मुसलमान उनका क़त्ले आ़म करेंगे और यहूदियों को दरख़्ते "ग़रक़द" की आड़ के सिवा कहीं पनाह नहीं मिलेगी।

(मिरक़ात जिल्द 5 सफ़हा 157)

एक बरस एक महीना के बराबर

हदीस (40)

हज़रते अनस रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़यामत नहीं क़ायम होगी यहां तक कि ज़माना एक दूसरे से क़रीब हो जायेगा (यानी) एक साल मिस्ल एक महीना के गुज़र जाएगा और एक महीना मिस्ल

एक हफ़्ता के और एक हफ़्ता मिस्ल एक दिन के और एक दिन मिस्ल एक धंटा के और एक घंटा मिस्ल आग की एक चमक के हो जायेगा। *(मिशकात जिल्द 2 सफ़हा 470)*

तशरीह:– यह हदीस तिर्मीज़ी में भी है। हदीस का मतलब यह है कि जब क़यामत क़रीब आजायेगी तो साल महीना और दिन जल्दी जल्दी गुज़रने लगेगा इसकी या तो यह सूरत होगी कि ज़माना में इस क़दर बे बरकती हो जायेगी कि जल्दी जल्दी ज़माना गुज़र जायेगा। और लोगों को ख़बर भी न होगी कि कितने दिन गुज़र गये। या यह सूरत होगी कि उस ज़माने में लोग इस क़दर क़िस्म क़िस्म के शदाइद व मसाइब, (मुसीबतों) और फ़ितनों के हंगामों में मशग़ूल और परेशान व बद हवास हो जायेंगे कि उन्हे यह एहसास ही नहीं होगा कि कब साल गुज़र गया? और मेरी उम्र कितनी गुज़र गई और किस काम में गुज़र गई ? और कौन सा महीना आया और कौन सा महीना गया? क्योंकि कि हर शख़्स का यह तजरबा हे कि सख़्त परेशान कुन मसरूफ़ियात की हालत में बहुत जल्द वक़्त गुज़र जाता है।

तब्सिरा:– क़यामत की इस निशानी का ज़ुहूर भी शुरू हो गया। चुनांचे हर शख़्स इसको महसूस करने लगा है कि देखते ही देखते चट पट साल गुज़र जाता है और अब साल भर में भी इतना काम नहीं हो पाता जितना पहले छः महीने में हो जाया करता था।

वल्लाहु तआ़ला आअ़लम

पहाड़ों का टल जाना

हदीस (41)

हज़रते समोरह् रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मरवी है कि क़यामत नहीं क़ायम होगी यहां तक कि पहाड़ अपनी जगहों से टल जायेंगे।

(हुज्जतुल्लाह जिल्द 2 सफ़हा 825 व हवाला तब्रानी)

तब्सिरा:– क़यामत की यह निशानी ज़ाहिर हो चुकी क्योंकि ज़लज़लों में पहाड़ों का अपनी जगहों से टल जाना बारहा वाक़िअ़ हो चुका है।

चुनांन्चे मुन्दर्जा ज़ैल दो वाक़िआ़त तारीख़ों में मज़कूर हैं जो बहुत ही मुस्तनद और मशहूर हैं जिन को अ़ल्लामा सुयूती ने तारीख़ूल खोलफ़ा में लिखा है।

(1) 242 हिज॰ में मुतवक्किल अ़ब्बासी के दौरे हुकूमत में यमन का एक पहाड़ जिसपर कुछ लोगों की खेतियां थी वह अपनी जगह से हट कर दुसरे लोंगों के खेतों में चला गया।

(हुज्जतुल्लाह जिल्द 2 सफ़हा 825)

(2) इसी तरह 300 हिज॰ में शहरे दीनौर का एक पहाड़ ज़मीन के अन्दर धंस कर बिल्कुल ही ग़ायब हो गया और वहां से इस क़दर ज़्यादा पानी निकल पड़ा कि बहुत सी बस्तियां ग़र्क़ हो गयीं (डूबगयीं)

(हुज्जतुल्लाह जिल्द 2 सफ़हा 825)

सुर्ख़ आँधी

हदीस (42)

हज़रते अबू हुरैरह रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब माले ग़नीमत को लोग अपनी दौलत, और अमानत को माले ग़नीमत और ज़कात को तावान बनालेंगे–और इल्म को दीन के सिवा किसी दुसरे मक़सद से पढ़ेंगे और आदमी अपनी बीवी का फ़रमां बरदार और अपनी मां का नाफ़रमान होगा अपने दोस्त को क़रीब करेगा और आपने बाप को दूर कर देगा और मस्जिदों में आवाज़ें बुलन्द होंगी। और क़बीला का सरदार उनमें का फ़ासिक आदमी होगा। और क़ौम का रहनुमा उनमें का सबसे ज़्यादह कमीना शख़्स होगा और आदमी की ताज़ीम उसके शर के ख़ौफ़ से की जायेगी और गाने वालियों और बाजों का हर तरफ़ चर्चा होगा और क़िस्म क़िस्म की शरावों को लोग पीने लगेंगे और इस उम्मत के पिछले लोग उम्मत के अगले लोगों पर लानत करने लगेंगे उस वक़्त तुम लोग सुर्ख़ आंधी और ज़लज़ला, और ज़मीन के धंस जाने और सूरतों के विगड़जाने और पत्थरों की बारिश का इन्तिज़ार करो और उस वक़्त (क़यामत की) निशानियां एक के बाद दुसरी लगातार इस तरह ज़ाहिर होने लगेंगी जैसे मोती की लड़ी का धागा काट दिया गया हो तो मोतियों के दाने एक के बाद दुसरे लगातार गिरने लग

जाते हैं।

(मिशकात जिल्द 2 सफ़हा 470)

तब्सिरा:– क़यामत की मज़कूरह बाला तमाम निशानियां ज़ाहिर हो चुकी हैं। सुर्ख़ आंधियां, ज़लज़ले, ज़मीन में धंसना सूरत का बिगड़ जाना, पत्थरों की बारिश यह सब निशानियां बारहा ज़ाहिर हो चुकी हैं। और जिस क़दर क़यामत क़रीब होती जायेगी यह निशानियां और इनके सिवा दुसरी अ़लामात और निशानियां लगातार ज़ाहिर होती रहेंगी।

चन्द रंग की आंधियां : (1) 232 हिज॰ में मुतवक्किल अ़ब्बासी के इब्तिदायी दौरे हुकूमत में इराक़ की सर ज़मीन पर एक ऐसी गर्म व सुर्ख़ आंधी आयी कि कुफ़ा व बसरा और बग़दाद की तमाम खेतियां जलकर राख हो गयीं और हज़ारों मुसाफ़िर मर गये यह आंधी हमदान तक पहुंची और वहां के खेतों को भी जला डाला, क़ाफ़िलों का चलना, लोगों का बाज़ारों में निकलना बन्द हो गया। इन्सानों के सिवा बेशुमार हैवानात हिलाक व बरबाद हो गये और यह आंधी मुसल्सल पचास दिनों तक चलती रही।

(2) 208 हिज॰ में मुअ़्तज़िद अ़ब्बासी की हुकूमत में एक सियाह (काली) रंग की आंधी आयी जिसके बाद एक शदीद ज़लज़ला आया जिससे बाज़ शहर बरबाद हो गये।

(3) 235 हिज॰ में एक ज़र्द (पीले) रंग की आंधी आयी फिर वह हरे रंग की हो गयी फिर बिल्कुल काली हो गयी।

(हुज्जतुल्लाह जिल्द 2 सफ़हा 828)

नारए तकबीर से क़िला फ़तह

हदीस (43)

हज़रते अबू हुरैरह रज़िअल्लाहु अन्हु ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क्या तुम लोगों ने सुना है कि कोई ऐसा शहर है जिसका एक किनारा ख़ुश्की (सूखा) में है और एक किनारा दरिया में है? लोगों ने कहा कि जी हां या रसूलुल्लाह! आपने फ़रमाया कि क़यामत नहीं क़ायम होगी! यहां तक कि हज़रते इसहाक़ अलैहिस्सलाम की औलाद में से सत्तर 70 हज़ार मुसलमान इस शहर में जिहाद करेंगे जब यह लोग उस शहर के पास पहुंच कर पड़ाव डालेंगे तो न हथियार से जंग करेंगे न कोई तीर चलायेंगे। सिर्फ़, "लाइला ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर" कहेंगे। और उस शहर के क़िला का एक किनारा ग़िर पड़ेगा। फिर दुसरी मरतबा जब "लाइला ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर" कहेंगे तो दुसरा किनारा गिर पड़ेगा फिर तीसरी मरतबा "लाइला ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर" कहेंगे तो क़िला का फाटक खुल जायेगा और यह लोग शहर में दाख़िल हो कर माले ग़नीमत पायेंगे और इस दौरान में कि यह लोग माले ग़नीमत तक़सीम कर रहे होंगे कि अचानक कोई चीख़ कर यह कहेगा कि "यक़ीन मानों दज्जाल निकल पड़ा" यह लोग फ़ौरन ही सारी चीज़ों को छोड़ कर अपने घरों को वापस लौट जायेंगे।

(मिशकात जिल्द 2 सफ़हा 467)

तब्सिरा:- यह पेशन गोयी अभी पूरी नहीं हुयी ग़ालिबन

इमाम मेहदी के ज़ुहूर के बाद शाम के मुसलमान यह जिहाद करेंगे-और यह उन लोगों की करामत होगी कि नारए तकबीर से पूरा क़िला मिस्मार और मफ़्तूह (फ़तह) हो जायेगा और यह लोग ऐसे बहादूर और शेर दिल मुसलमान होंगे कि दज्जाल के ख़ुरूज की ख़बर सुनकर उस से जंग करने के लिये अपनी बस्तियों की तरफ़ लौट पड़ेगें न फ़रार करेंगे न मरऊब होंगे।

100 में से 99 मक़्तूल

हदीस (44)

हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊद रज़िअल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि क़यामत क़ायम नहीं होगी यहां तक कि न मीरास तक़सीम की जायेगी न माले ग़नीमत मिलने की ख़ुशी मनायी जायेगी फिर आप ने फ़रमाया कि इस्लाम के बहुत बड़े दुशमन (कुफ़्फ़ारे रूम) अहले शाम से जंग करने के लिये जमा होंगे और मुसलमान भी उन लोगों से लड़ने के लिये लशकर जमा करेंगे फिर अहले इस्लाम एक ऐसी फ़ौज को मुन्तख़ब करेंगे जो मरते दम तक जंग करती रहेगी और उसी वक़्त लौटे जब ग़ालिब हो जाये वर ना मर मिटे। चुनांचे यह लोग दुशमनों से जंग करते रहेंगे। यहां तक कि रात दोनों फ़ौजों के दरमियान हायल हो जायेगी उस वक़्त दोनों लशकर बग़ैर ग़ालिब आये वापस लौट जायेंगे और मुसलमानों की मुन्तख़ब फ़ौज (तक़रीबन) फ़ना हो चुकी होगी फिर मुसलमान

एक दुसरी फ़ौज चुनेंगे जो मरते दम तक लड़ती रहे और उसी वक़्त वह लौटे जब ग़ालिब हो जाये वरना क़त्ल हो जाये। चुनांचे यह दुसरी फ़ौज भी लड़ती रहेगी यहां तक कि रात हायल हो जायेगी और दोनों फ़ौजें बिग़ैर ग़ल्बा पाये वापस लौट जायेंगी और मुसलमानों की यह चुनी हुयी फ़ौज (तक़रीबन) कट चुकी होगी फिर मुसलमान एक तीसरी फ़ौज का इन्तिख़ाब करेंगे जो मौत तक जंग करती रहे और उसी वक़्त लौटे जब ग़ालिब हो जाये वरर्ना मर मिटे। चुनांचे यह फ़ौज भी रात तक लड़ती रहेगी। फिर दोनों फ़ौजें बग़ैर ग़ालिब हुये लौट जायेंगी और मुसलमानों की यह फ़ौज भी (तक़रीबन) ख़त्म हो चुकी होगी। यहां तक कि जब चौथा दिन आयेगा तो जितने मुसलमान बाक़ी बचे होंगे वह सब एक साथ उठ खड़े होंगे उस वक़्त अल्लाह तआ़ला काफ़िरों को शिकस्त दे देगा और यह ऐसी शदीद जंग होगी कि उसकी मिसाल कभी देखने में न आयी होगी यहां तक कि अगर कोई परिन्दा मैदाने जंग पर से गुज़रेगा तो वह भी आगे न बढ़ सकेगा और मरकर गिर पड़ेगा उस वक़्त जब मक़्तूलीन की गिन्ती की जायेगी तो 100 सौ आदमी जो एक मुरि-षे आला की औलाद में से होंगें। उनमें एक आदमी ज़िन्दा बाक़ी रह गया होगा तो इस सूरत में भला माले ग़नीमत मिलने की क्या ख़ुशी होगी? और कहां से मीरास तक़सीम होगी? अभी यह लोग उसी हाल में होंगे कि अचानक यह लोग इस से भी बड़ी जंग की ख़बर सुनेंगे और कोई चीख़कर यह एलान करेगा कि दज्जाल मुसलमानों की ग़ैर मौजूदगी में उनके बाल बच्चों पर हमलह आवर हो गया है चुनांचे (यह सुनकर) यह लोग अपने सारे माल व असबाब को छोड़कर उस तरफ़ मुतवज्जह हो जायेंगे और

10 सवारों को दुश्मन की पोज़ीशन मालूम करने के लिये भेजेंगे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मुझे उन सवारों और उनके बापों के नाम मालूम हैं और मैं उन लोगों के घोड़ों के रंग को भी जानता पहचानता हूं यह लोग उस दिन ज़मीन की पुश्त पर तमाम दुनिया के सवारों से ज़्यादा बेहतरीन और अफ़ज़ल सवार होंगे

(मिश्कात जिल्द 2 सफ़्हा 466 द मुस्लिम)

तब्सिरा:- रूमी काफ़िरों और शामी मुसल्मानों की यह जंग तो हुनूज़ (अभी तक) नहीं हुई है बल्कि यह जंग बिल्कुल क़ुरबे क़यामत में होगी

इस हदीस से साबित होता है कि हुज़ूर पुरनूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की निगाहे नुबूवत उस जंग की तमाम पोज़ीशनों को सैकड़ों बरस पहले देख रही थी। यहां तक कि सवारों के घोड़ों का रंग रूप भी आपकी नज़रों के सामने था- सुब्हानल्लाह! आपकी चश्मे नुबूवत और आपके उलूमे ग़ैब की वुस्अ़त व कसरत का क्या कहना? काश हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के इल्मे ग़ैब का इन्कार करने वालों के लिये यह हदीसें हिदायत का सामान बन जातीं और वह अपनी गुमराहियों की जहन्नम से निकल कर सिराते मुस्तक़ीम की जन्नत में पहुंच जाते। मगर इसका क्या इलाज कि!

तेहिदस्ताने किस्मत रा चे सूद अज़ रहबरे कामिल।
ख़िज़्र अज़ आबे हैवां तिश्नह मी आरद सिकन्दर रा।।

❖

फ़तहे क़ुस्तुन्तुनियः

हदीस 45

हज़रते अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु रावी हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़यामत नहीं क़ायम होगी यहां तक कि रूमियों का लश्कर मक़ामें "आमाक़" या मक़ामें "दाबिक़" में पड़ाव करेगा तो उन लोगों के मुक़ाबिले के लिये शहरे (हलब या दमिश्क़) से एक लश्कर निकलेगा जो उस दिन अहले ज़मीन के सब से बेहतरीन लोग होंगे जब यह लोग सफ़ बन्दी करेंगे तो रूमी कहेंगे कि (ए मुसलमानों) तुम हमारे और उन मुसलमानों के दरमियान रास्ता ख़ाली कर दो- जिन लोगों ने (जिहाद करके) हमारे आदमियों को गिरिफ़्तार कर लिया है हम उनसे जंग करेंगे तो मुसलमान कहेंगे कि नहीं- ख़ुदा की क़सम हम तुम्हारे और अपने भाइयों के दरमियान रास्ता ख़ाली नहीं करेंगे- फिर यह लोग रूमियों से जंग करेंगे तो एक तिहायी मुसलमान शिकस्त खा कर भाग जायेंगे जिनकी तौबा अल्लाह तआ़ला कभी क़ुबूल नहीं फ़रमायेगा- और एक तिहायी मुसलमान क़त्ल हो जायेंगे जो अल्लाह तआ़ला के नज़दीक तमाम शहीदों से ज्यादा अफ़ज़ल होंगे और एक तिहायी मुसलमान फ़तहयाब होंगे यह लोग कभी फ़ितनों में मुब्तिला नहीं किये जायेंगे और यही लोग क़ुस्तुन्तुनियः को फ़तह करेंगे फिर इस दौरान में कि यह लोग अमवालेग़नीमत को तक़सीम कर रहे होंगे और अपनी तलवारें ज़ैतुन के दरख़्तों पर लटकाये हुये होंगे कि बिल्कुल ही नागहां (अचानक) शैतान चीख़ कर एलान करेगा कि मसीहे दज्जाल तुम्हारे पीछे तुम्हारे घर वालों पर हमलह

आवर हो गया है यह सुन कर लोग उस जगह से निकल पड़ेंगे हालांकि यह ख़बर बिल्कुल ही ग़लत होगी लेकिन जब यह लोग शाम (बैतुल मुक़द्दस) में पहुंचेंगे तो उस वक़्त दज्जाल निकलेगा यह लोग जब दज्जाल से जंग करने के लिये सफ़ आरायी कर रहे होंगे तो उस वक़्त नमाज़ की एक़ामत कही जायेगी और हज़रते ईसा बिन मरियम अ़लैहिस्सलाम आस्मान से नुज़ूल फ़रमायेंगे और उन लोगों की इमामत फ़रमायेंगे जब अल्लाह तआ़ला का दुश्मन दज्जाल उनको देखेगा तो इस तरह पिघलने लगेगा जिस तरह पानी में नमक पिघल जाता है और अगर हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम उसको छोड़ देते तो पिघल कर हलाक हो जाता लेकिन अल्लाह तआ़ला उसको हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम के हाथ से क़त्ल फ़रमायेगा फिर हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम अपने नेज़ा पर लगा हुआ दज्जाल का ख़ून लोगों को दिखायेंगे।

(मिश्कात जिल्द 2 सफ़्हा 466)

तशरीह:- इस हदीस में मुसलमान जिस शहर से निकल कर रूमियों से जंग करेंगे उसके बारे में इख़्तिलाफ़ है कि हदीस के लफ़्ज़ "मिनल्मदीनते" से कौन सा शहर मुराद है तो इब्नुल मुल्क का क़ौल है कि इस से मुराद "हलब" है और बाज़ शारेहीने हदीस ने फ़रमाया कि इससे मुराद "दमिश्क़" है और बाज़ ने कहा कि इससे मुराद मदीनह तय्येबह है लेकिन "अज़हार" में इस क़ौल को ज़ईफ़ (कमज़ोर) बताया है क्यूंकि दूसरी रिवायतों से यह ज़ाहिर होता है कि रूमियों से लड़ने के लिये निकलने वाला लश्कर हज़रते इमाम मेंहदी का लश्कर होगा और उन दिनों मदीनह तय्येबह की आबादी वीरान हो चुकी होगी। *(मिरक़ात जिल्द 5 सफ़्हा 159)*

कुस्तुन्तुनियहः- सल्तनते रूम के शहरों में सबसे बड़ा और निहायत मज़बूत और अहम क़िला है।

तब्सिराः- रूमियों का यह शहर कुस्तुन्तुनियह हज़राते सहाबा रज़ियल्लाहु अ़नहुम के ज़माने में पहली मर्तबा फ़तह हो चुका था अब दूसरी मर्तबा बिल्कुल क़यामत क़रीब आ जाने के वक़्त हज़रते इमाम मेंहदी का लश्कर इस शहर को फ़तह करेगा इस हदीस में इसी दूसरी फ़तह का तज़्किरा है।

हाथ में अंगारा

हदीस (46)

हज़रते अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि लोगों पर ऐसा ज़माना आयेगा कि दीन पर साबित रहने वाला (मोमिन) मुट्ठी में अंगारा लेने वाले के मिस्ल होगा।

(तिर्मिज़ी जिल्द 2 सफ़्हा 50)

तशरीहः- यानी क़ुर्बे क़यामत में फ़िस्क व फ़ुजूर की कसरत और फ़ित्नों के तूफ़ान और ज़ालिम हुकूमतों और बददीनों के ज़ुल्म व उदवान के सबब से मोमिन इस क़दर मसाइब में गिरफ़्तार हो जाएगा कि उसके लिए अपने दीन पर क़ायम रहना उतना ही मुश्किल हो जायेगा कि जितना मुट्ठी में आग का अंगारा लेना मुश्किल होता है।

तब्सिराः- इस निशानी का अभी मुकम्मल तौर पर ज़ुहूर नहीं हुआ है मगर इसके आसार शुरू हो गये हैं खुदावन्दे करीम मोमिनीन के दीन व ईमान की हिफ़ाज़त फ़रमाये (आमीन)

इमाम मेहदी का ज़ुहूर

हदीस (47)

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि दुनिया ख़त्म नहीं होगी यहां तक कि एक आदमी मेरे अहले बैत में से अ़रब का बादशाह होगा और वह मेरा हमनाम होगा।

(मिश्कात जिल्द 2 सफ़्हा 470)

तशरीहः- यह हदीस तिर्मिज़ी व अबूदाऊद में भी है और हज़रते इमाम मेंहदी के बारे में इसके अ़लावा बकसरत (बहुत ज़्यादा) रिवायात वारिद हुई हैं आपका ज़ुहूर क़यामत की बड़ी निशानियों में से पहली निशानी है हज़रते इमाम मेहदी का नाम, "मुहम्मद" कुन्नियत "अबू अ़ब्दुल्लाह" और लक़ब "जाबिर" होंगा और यह हज़रते बीबी फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा की औलाद में से होंगे। *(हुज्जतुल्लाह जिल्द 2 सफ़्हा 836)*

इसमें इख़्तिलाफ़ है कि आप हसनी सैयद होंगे या हुसैनी इस बारे में ज़्यादह ज़ाहिर क़ौल यह है कि आप बाप की तरफ़ से हसनी

और मां की तरफ़ से हुसैनी होंगे।

(मिरक़ात जिल्द 5 सफ़्हा 179)

चुनान्चे इस बारे में मुन्दर्जा ज़ेल हदीस दलील है कि आप हसनी सैयद होंगे।

हज़रते "अ़ली" रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अपने साहबज़ादे हज़रते हसन रज़ियल्लाहु अ़न्हु को देखकर फ़रमाया कि यक़ीनन मेरा यह बेटा सरदार है जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इस का नाम सय्यद (सरदार) रखा हैऔर अ़न्क़रीब (जल्द ही) इसकी पुश्त से एक मर्द पैदा होगा जिसका नाम तुम्हारे नबी के नाम पर रखा जायेगा वह अख़्लाक़ में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ मुशाबिहत रखेगा लेकिन जिस्मानी बनवाट में हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के मुशाबेह नहीं होगा फिर हज़रते अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने यह क़िस्सा जिक्र फ़रमाया कि वह (इमाम मेहदी) ज़मीन को अ़द्ल (इन्साफ़) से भर देगा।

(मिश्कात जिल्द 2 सफ़्हा 471)

हदीसे मज़कूरह बाला से यह भी मालूम हो गया कि शीओं का यह क़ौल कि इमाम मुहम्मद अ़स्करी क़ायम मुन्तज़िर ही मेहदी मौऊद हैं बिल्कुल ही ग़लत है क्योंकि इमाम मुहम्मंद अ़स्करी के बारे में शीआ़ व सुन्नी तमाम मोवर्रेख़ीन का इत्तिफ़ाक़ है कि यह हज़रते इमाम हुसैन की औलाद में से हैं और हुसैनी सय्यद हैं

(मिरक़ात जिल्द 5 सफ़्हा 179)

इमाम मेहदी की बैअ़त

रिवायाते हदीस में आया है कि जब तमाम दुनिया में कुफ़्र फैलने लगेगा तो उस वक़्त तमाम औलिया अल्लाह बिल्ख़ुसूस अबदाल हज़रात सब जगहों से सिमट कर मक्का मुअ़ज़्ज़मा और मदीना मुनव्वरा को हिजरत कर जायेंगे क्यूंकि सिर्फ़ इन्हीं दो मक़ामात पर इस्लाम रहेगा बाक़ी सारी दुनिया कुफ़रिस्तान बन जायेगी रमज़ान शरीफ़ का महीना होगा तमाम अबदाल और औलिया खानए काअ़बा का तवाफ़ करते होंग और उसी मजमा में हज़रते इमाम मेंहदी भी होंगे औलियाए किराम उनको पहचान कर उनसे बैअ़त की दरख़ास्त करेंगे और वह इन्कार करेंगे अचानक एक ग़ैबी आवाज़ सब लोग सुनेंगे कि यह अल्लाह का ख़लीफ़ा मेहदी है लिहाज़ा इसकी बात सुनो और इसका हुक्म मानो इस ग़ैबी सदा को सुनकर सब लोग आपके दस्ते मुबारक पर बैअ़त करेंगे इस तरह आप बादशाह बन जायेंगे और आप सब मुसलमानों को अपने हमराह लेकर मुल्के शाम को तशरीफ़ ले जायेंगे और कुफ़्फ़ार से जिहाद फ़रमायेंगे और अपने अ़द्ल व इन्साफ़ से सारी दुनिया को भर देंगे और रुए ज़मीन पर हर तरफ़ ख़ैर व बरकत का ज़ुहूर और ख़ुशहाली का दौर दौरह होगा।

हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम का नुज़ूल

हदीस (48)

हज़रते अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मरवी है नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वस्सलम ने फ़रमाया कि यक़ीनन ज़माना क़रीब आ गया है कि तुम्हारे अन्दर हज़रते ईसा बिन मरियम (अ़लैहिस्सलाम) नुज़ूल फ़रमायेंगे जो अ़दल के साथ हुकूमत फ़रमाने वाले होंगे वह सलीब को तोड़ेंगे और ख़िन्ज़ीर को क़त्ल करेंगे और जिज़्या (ख़ेराज) को उठा देंगे और (उनके दौर) में इस क़दर माल कसीर हो जायेगा कि कोई इसको क़ुबूल नहीं करेगा।

(तिर्मिज़ी जिल्द 2 सफ़्हा 46)

तशरीह:– इस हदीस में क़यामत की बड़ी निशानियों में से एक निशानी यानी हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम के आसमान से नुज़ूल की ख़बर है।

रिवायत है कि दमिश्क़ की जामा मस्जिद में हज़रते इमाम मेहदी होंगे और नमाज़े फ़ज्र के लिये एक़ामत हो चुकी होगी कि नागहां (अचानक) हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम उसी मस्जिद के मशरिक़ी (पुरबी) मिनारे पर आसमान से नुज़ूल फ़रमायेंगे और हज़रते इमाम मेहदी के साथ दज्जाल की जंग में शरीक होकर दज्जाल को क़त्ल फ़रमायेंगे ईसाई जिन सलीबों की परस्तिश (पूजा) करते हैं आप उन सलीबों को ढूंड ढूंड कर तोड़ डालेंगे और ख़िन्ज़ीरों को क़त्ल कर डालेंगे और कुफ़्फ़ार से जिज़्या ख़त्म करके साफ़ एलान

फ़रमादेंगे कि कुफ़्फ़ार या तो इस्लाम क़ुबूल करें या जंग के लिये तैयार हो जायें चुनांचे इसका यह असर होगा कि सब कुफ़्फ़ार मुसलमान हो जायेंगे और तमाम जहान में दीन सिर्फ़ एक दीने इस्लाम होगा चालीस (40) बरस तक आप इस दुनिया में रहेंगे निकाह करेंगे साहिबे औलाद भी होंगे और वफ़ात के बाद आप मदीना मुनव्वरा में रौज़ए अनवर के अन्दर दफ़्न होंगे।

दज्जाल का निकलना

हदीस (49)

हज़रते हुज़ैफ़ा बिन ओसैद ग़ेफ़ारी रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत हैं उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हमारी तरफ़ तशरीफ़ लाये और हम लोग आपस में कुछ तज़्केरह कर रहे थे तो इरशाद फ़रमाया कि तुम लोग किस चीज़ का तज़्केरह कर रहे थे हम लोगों ने कहा कि हम क़यामत का तज़्केरह कर रहे थे आपने फ़रमाया कि क़यामत हरगिज़–हरगिज़ क़ायम नहीं होगी। यहां तक कि तुम लोग दस निशानियां देख लोगे फिर आपने (निशानियों) का ज़िक्र फ़रमाया कि (1) धुआं (2) दज्जाल (3) दाब्बह (4) सूरज का पच्छिम से तुलू करना। (5) हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम का नुज़ूल (6) याजूज माजूज का निकलना (7) मशरिक़ में ज़मीन का धंसना (8) मग़रिब में ज़मीन का धंसना (9) जज़ीरतुल अ़रब में ज़मीन का धंसना (10) और आख़िर में एक आग जो यमन से निकलेगी लोगों को महशर की तरफ़ हांक देगी।

(मुस्लिम जिल्द 2 सफ़्हा 393)

तशरीह:- इस हदीस में जो दस 10 निशानियां मज़कूर हैं उनकी मुख़्तसर तफ़सील यह है।

धुआँ:- क़ुर्बे क़यामत में एक ऐसा धुआं उठेगा जिससे ज़मीन व आसमान में हर तरफ़ अंधेरा हो जायेगा।

दज्जाल:- यह ख़बीस ख़ुदायी का दावा करेगा उसकी पेशानी पर *"काफ़-फ़े-रे"* यानी काफ़िर लिखा होगा जिसको हर मुसलमान पढ़ लेगा और काफ़िर को नज़र न आयेगा यह चालीस दिन में मक्का मुअ़ज़्ज़मा और मदीना मुनव्वरा के सिवा तमाम रुए ज़मीन का गश्त कर लेगा क्यूंकि वह इतनी तेज़ी के साथ सफ़र करेगा जैसे हवा में उड़ता हुवा बादल इसका फ़ित्ना बहुत ही बड़ा और निहायत ही शदीद होगा एक बाग़ और एक आग उसके हमराह होगी जिनका नाम वह जन्नत और दोज़ख़ रखेगा मगर जो देखने में आग होगी वह हक़ीक़त में आराम की जगह होगी और जो देखने में बाग़ होगा वह हक़ीक़त में आग होगी वह मुर्दों को ज़िन्दा करेगा आसमान से पानी बरसायेगा ज़मीन से सबज़ा उगायेगा और तरह-तरहसे लोगो को गुमराह करता फिरेगा जब वह सारी दुनिया में फ़िर फ़िरा कर मुल्के शाम की ज़मीन में पहुंचेगा तो हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम दमिश्क़ की जामा मस्जिद के मशरिक़ी (पुरबी) मिनारे पर आसमान से उतरेंगे वह आपकी ख़ुश्बू से पानी में नमक की तरह पिघलने लगेगा यहां तक कि हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम उसकी पीठ में नेज़ा मार कर उसको क़त्ल फ़रमायेंगे।

दाब्बतुल् अर्द:- यह एक जानवर होगा जिसके हाथ में हज़रते मूसा अ़लैहिस्सलाम का अ़सा (लाठी-छड़ी) और हज़रते सुलेमान

अ़लैहिस्सलाम की अंगूठी होगी अ़सा से हर मोमिन की पेशानी पर एक नूरानी निशान बना देगा और अंगूठी से हर काफ़िर की पेशानी पर एक सख़्त सियाह धब्बा लगा देगा उस वक़्त तमाम मुस्लिम व काफ़िर एलानिय: ज़ाहिर होंगे यह अ़लामत कभी भी नहीं बदलेगी जो काफ़िर है वह हरगिज़ कभी मुसलमान न होगा और जो मुसलमान है वह हमेशा ईमान पर क़ायम रहेगा।

सूरज का पश्चिम से तुलूअ़ होना

क़यामत की इस अ़लामत का ज़ुहूर होते ही तौबा का दरवाज़ा बन्द हो जायेगा इसके बाद न किसी गुनहगार मुसलमान की तौबा क़ुबूल होगी न किसी काफ़िर का ईमान लाना मोअ़तबर होगा।

हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम का नुज़ूल

इसका तज़किरा गुज़र चुका है

याजूज व माजूज

दज्जाल के क़त्ल हो जाने के बाद अल्लाह तआ़ला हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम को हुक्म देगा कि वह तमाम मुसलमानों को अपने साथ लेकर कोहे तूर पर चले जायें क्यूंकि अब एक ऐसा गिरोह निकलेगा जिन से लड़ने की किसी को ताक़त नहीं है।

चुनांचे हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम और मुसलमानों के कोहे तूर पर चले जाने के बाद याजूज व माजूज ज़ाहिर होंगे यह लोग इस क़दर कसीर तादाद में होंगे कि उनका पहला गिरोह, "बुहैरए तब्रिया" पर (जिस की लम्बाई दस मील होगी) जब गुज़रेगा तो यह उसका सारा पानी पीकर उस तालाब को इस तरह खुश्क कर डालेंगे कि जब उन लोगों का दूसरा गिरोह आयेगा तो कहेगा कि कभी यहां पानी था-फिर यह तमाम दुनिया में क़त्ल व ग़ारत और फ़साद बरपा करेंगे और उन लोगों की सरकशी इस क़दर बढ़ जायेगी कि यह लोग ज़मीन वालों को क़त्ल करके कहेंगे कि ज़मीन वालों को तो हम क़त्ल कर चुके आओ अब आसमान वालों को क़त्ल करें यहि कहकर ये लोग असमान की तरफ़ तीर चलाने लगेंगे यह लोग अपनी इन्ही शैतानी हरकतों में मशग़ूल होंगे कि हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम अपने हमराहियों के साथ दुआ़ मांगेंगे तो अल्लाह तआ़ला उन लोगों की गर्दनों में एक क़िस्म के कीड़े पैदा फ़रमा देगा जिससे वह सबके सब मरकर हलाक हो जायेंगे उन लोगों के मर जाने के बाद हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम मुसलमानों को साथ लेकर पहाड़ से उतरेंगे तो वह देखेंगे कि तमाम ज़मीन उन लोगों की लाशों और बदबू से भरी पड़ी है फिर हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम कि दुआ़ से अल्लाह तआ़ला एक क़िस्म की चिड़ियों को भेजेगा कि वो उनकी लाशों को जहां अल्लाह तआ़ला चाहेगा फेंक देंगी और उन लोगों के तीर व कमान और दूसरे हथियारों को मुसलमान सात बरस तक चलाते रहेंगे फिर उसके बाद ज़ोरदार बारिश होगी और ज़मीन अपनी बरकतें उगल देगी और आसमान अपनी बरकतें उंडेल देगा यहां तक कि एक अनार को एक जमाअ़त खाकर आसूदह हो जाएगी और दूध में इस क़दर बरकत होगी कि एक उंटनी का

दूध एक जमाअ़त को काफ़ी होगा और एक गाय का दूध पूरे क़बीले को और एक बकरी का दूध खनदान भर को सैराब कर देगा।

क़यामत की हवा

हदीस (50)

हज़रते आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़नहा से मरवी है कि उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना कि रात और दिन ख़त्म नहीं होंगे यहां तक कि लात व उज्ज़ा की इबादत की जाएगी तो मैंने कहा कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसललम मैं तो ये गुमान करती थी कि जब अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमा दी (आयत) हुवल्लज़ी अरसल: रसूलहू बिल्हुदा व दीनिल्हक़्क़े (आख़िर तक) तो यह दीने ताम (मुक़म्मल-दीन) है तो हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया कि बेशक जब तक अल्लाह तआ़ला चाहेगा यह दीन ऐसा ही रहेगा लेकिन फिर अल्लाह तआ़ला एक पाकीज़ा हवा भेजेगा तो जिसके दिल में राई के बराबर ईमान होगा उसकी वफ़ात हो जायेगी फिर वही लोग बाक़ी रह जायेंगे जिनमें कोई भलाई नहीं रहेगी तो वह लोग अपने बाप दादाओं के दीन की तरफ़ लौट जायेंगे।

(मुस्लिम जिल्द 2 सफ़्हा 394)

तशरीह:- हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम की वफ़ात के बाद जब

क़यामत क़ायम होने में सिर्फ़ 40 (चालीस) बरस रह जाएंगे तो एक निहायत ही पाकीज़ा और ख़ुश्बूदार हवा चलेगी जो लोगों के बग़लों के नीचे से गुज़रेगी जिसका असर यह होगा कि उस हवा के लगते ही मुसलमानों की वफ़ात (मौत) हो जायेगी और सारी दुनिया में काफ़िर ही काफ़िर रह जायेंगे जो अपने बाप दादाओं की तरह लात व उज़्ज़ा वग़ैरह बुतों की पूजा करने लगेंगे और उन्हीं काफ़िरों पर क़यामत क़ायम होगी।

हदीसे मज़्कूरह बाला (ऊपर लिखी हुई हदीस) में इसी हवा का ज़िक्र है जिसको हमने "क़यामत की हवा" से बयाना किया है।

वल्लाहु तआ़ला आ़अ्लम

तम्मत बिल्ख़ैर

वसल्लल्लाहु तआ़ला अ़ला ख़ैरे ख़ल्क़ेही
मुहम्मदिवं व आलिही व सह्बेही
अज्मईन वल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन